खोज गाँधी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की त्रैमासिक पत्रिका वर्ष-२ □ अंक-४,५ व ६ □ संयुक्तांक, जुलाई – दिसम्बर, २०१३

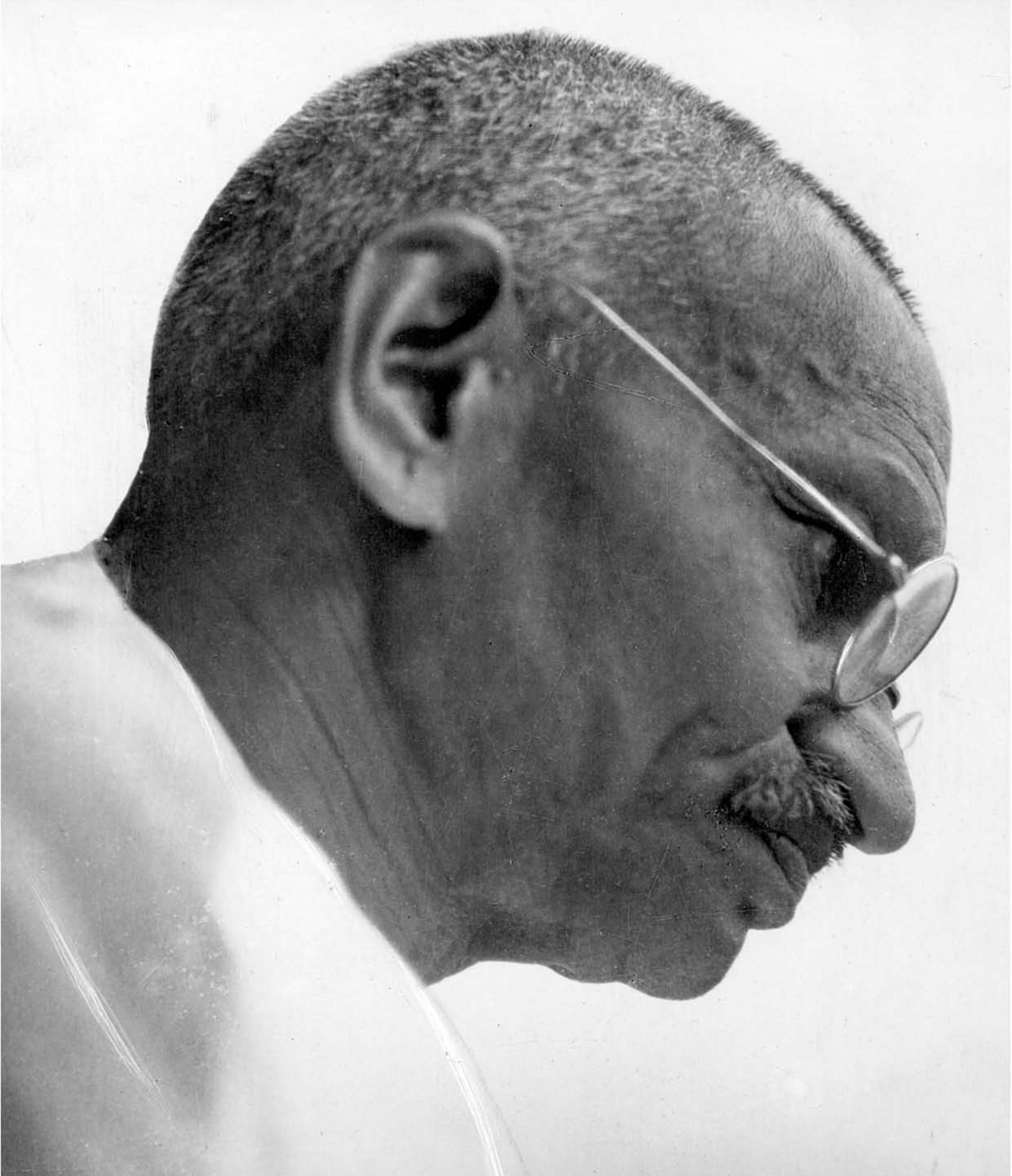

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित-

खोज गाँधी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित
वर्ष-2 ▫ अंक-4, 5 व 6 ▫ संयुक्तांक, जुलाई-दिसम्बर, 2013

....

संयम जीवन का स्वर्णिम सूत्र है। – महात्मा गाँधी

....

इस अंक में- .... **पृष्ठ**

सम्पादकीय........ १

लोक शिक्षण द्वारा भ्रष्टाचार निवारण........ २
न्या. चन्द्रशेखर धर्माधिकारी

मेरा वर्णाश्रम धर्म........ ४
मोहनदास करमचंद गाँधी

चोरी और प्रायश्चित्त........ ७
मोहनदास करमचंद गाँधी

आज की समाज रचना........ ९
डॉ. भवरलाल जैन

त्याग और समर्पण – हिन्दू धर्म का सार........ ११
मोहनदास करमचंद गाँधी

फाउण्डेशन की गतिविधियाँ........ १३-२०

....

मार्गदर्शक
न्या. चन्द्रशेखर धर्माधिकारी, डॉ. भवरलाल जैन

प्रबन्ध सम्पादक
अशोक जैन

सम्पादक
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय

कला एवं अक्षर-सज्जा
भूषण मोहरीर

सम्पादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118
जलगाँव-425 001
दूरभाष-0257-2260011/22, 2260381, मोबाईल- 9404955352
फैक्स-0257-2261133
वेब-www.gandhifoundation.net
ई-मेल- info@gandhifoundation.net;
pandey.shriprakash@gandhifoundation.net

....

यह पत्रिका गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, जलगाँव - 425 001(भारत) के लिए प्रबन्ध सम्पादक द्वारा प्रकाशित तथा टैको विजन्स प्रा. लि., मुंबई द्वारा मुद्रित। संयुक्तांक जुलाई-दिसम्बर,२०१३ (४,५,६)

....

सभी चित्र गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन संग्रह से।

सम्पादकीय...

भारत में आज भ्रष्टाचार सर्वाधिक चर्चा का विषय है। आजादी के एक दशक बाद से ही भारत भ्रष्टाचार के दलदल में धंसा नजर आने लगा था। २१ दिसम्बर १९६३ को संसद में भ्रष्टाचार के मुद्दे पर बोलते हुए डॉ. राममनोहर लोहिया ने कहा था, 'सिंहासन और व्यापार के बीच का सम्बन्ध भारत में जितना आज दूषित, भ्रष्ट और बेइमान हो गया है उतना दुनियाँ के इतिहास में कभी नहीं हुआ'।

आज भारत में भ्रष्टाचार एक अभिशाप बन गया है। यह दीमक की तरह पूरे तन्त्र को खोखला करता चला जा रहा है। सरकारी घोटालों और बढ़ती मंहगाई से भारत की सम्पूर्ण जनता त्राहि-त्राहि कर रही है। इस देश की २२ प्रतिशत जनता जहां एक ओर गरीबी रेखा के नीचे जैसे-तैसे जीवन बिता रही है, वहीं कुछ लोग ऐसे हैं जो जनता की गाढ़ी कमाई को अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं के लिये लुटा रहे हैं, देश को लूटकर सारा धन विदेशी बैंकों में जमा कर रहे हैं। 'भारतीय गरीब हैं लेकिन भारत देश कभी गरीब नहीं रहा'- यह कहना है स्विस बैंक के निदेशक का। भारत का लगभग २८० लाख करोड़ रुपया स्विस बैंक में जमा है। यह रकम इतनी है कि भारत का आने वाला ३० वर्षों का बजट बिना किसी टैक्स के बनाया जा सकता है। जरा सोचिये हमारे भ्रष्ट राजनेताओं और नौकरशाहों ने कैसे देश को लूटा है। अंग्रजों ने २०० वर्षों तक राज करके करीब १ लाख करोड़ रुपये लूटा किन्तु आजादी के ६७ वर्षों में हमने भ्रष्टाचार के माध्यम से २८० लाख करोड़ रुपये लूटा है। आज भ्रष्टाचार हर क्षेत्र में व्याप्त है। चाहे पुलिस तन्त्र हो, न्याय तन्त्र हो, सेना का क्षेत्र हो, राजनीति का क्षेत्र हो, संचार माध्यमों का क्षेत्र हो या कारपोरेट जगत् का क्षेत्र हो, चारो तरफ भ्रष्टाचार का बोलबाला है। ट्रान्सपरेन्सी इंटरनेशनल की २०१३ की रिपोर्ट के अनुसार भ्रष्टाचार में भारत का विश्व के १७७ देशों में ९४ वां स्थान है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ उठाये गये अबतक के सभी उपाय नाकाफी सिद्ध हुए हैं। अब लोकपाल विधेयक आया है, लेकिन क्या यह भ्रष्टाचार को खत्म कर पायेगा? कदापि नहीं। अधिक से अधिक यह कुछ हद तक अंकुश ही लगा पायेगा। क्योंकि भ्रष्टाचार हमारे दैनिक जीवन का अंग हो गया है। हम जानते हैं कि यह गलत है फिर भी हम यह गलती बार-बार करते हैं। गाँधीजी जब अहिंसा की बात करते थे तो कहते थे कि अहिंसा बहुत सूक्ष्म है। सिर्फ किसी को मारना या उसकी हत्या करना हिंसा नहीं है अपितु किसी के बारे में मन में हिंसा का विचार लाना भी हिंसा है। भ्रष्टाचार भी कुछ ऐसा ही है। मात्र पैसे खाना या पेशे का अनाप-सनाप दुरुपयोग करना ही भ्रष्टाचार नहीं है, बल्कि हर प्रकार का अनैतिक काम उसमें शामिल है, अन्तर्भूत है। भ्रष्टाचार हो रहा है, यह जानते हुए भी चुप रहना, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना है। भ्रष्टाचार की असली जड़ न कोई नेता है न कर्मचारी बल्कि हम स्वयं उसकी जड़ में हैं। भ्रष्टाचार तब तक दूर नहीं हो पायेगा जब तक प्रत्येक व्यक्ति को यह बोध नहीं हो जायेगा कि भ्रष्टाचार की जड़ में वह स्वयं है। खलील जिब्रान ने कहा है, 'जैसे वृक्ष का एक भी पत्ता पूरे वृक्ष की मूक सम्मति के बिना पीला नहीं पड़ता, वैसे ही हम सबकी दबी हुई इच्छाओं के बिना सरकारी कर्मचारी कुकर्म या दुष्कर्म नहीं कर सकते।' हम ही हैं वह आम आदमी जो भ्रष्टाचार के पौधे को पानी दे रहे हैं और हम ही चिल्ला भी रहे हैं कि यह पेड़ टूटता क्यों नहीं। यह बात हमारे ध्यान में नहीं आती कि भ्रष्टाचार के बाजार में पैसा खानेवाले की अपेक्षा कोई पथ्य या शुचिता का ख्याल न रखनेवाला और रिश्वत देने वाला अधिक भ्रष्टाचारी है। रिश्वत लेने वाला जितना दोषी है, उससे अधिक भ्रष्टाचारी वह है जो रिश्वत देता है। जब तक हममें से हर इकाई (व्यक्ति) अपने वैयक्तिक आचरण में सुधार नहीं लाती, न हम रिश्वत लेंगे, न रिश्वत देंगे, यह भाव जब तक नहीं आयेगा, तब तक हम इस भ्रष्टाचाररूपी महामारी से छुटकारा नहीं पा सकते।

आज हम भ्रष्टाचार के साथ जीने के लिये अभिशप्त हो गए हैं। ऐसा नहीं है कि भ्रष्टाचार मिट नहीं सकता। हम मान लिये हैं कि इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है। आवश्यकता है विश्वास के साथ कोशिश करने की। महात्मा गाँधी को जब जोहनिसवर्ग जाते समय अश्वेत होने के कारण ट्रेन के प्रथम श्रेणी के कम्पार्टमेन्ट से सामान सहित पीटरमरीत्सबर्ग स्टेशन के प्लेटफार्म पर फेंक दिया गया था, आज के बहुत से भारतीय उनकी जगह होते तो अपमान का घूंट पीकर सामान्य जीवन जी रहे होते। किन्तु गाँधीजी ने अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझते हुए उसका विरोध किया। कहते हैं कि उसी रात उस प्लेटफार्म पर गाँधीजी के जेहन में सत्याग्रह का बीज पड़ गया था। आज भ्रष्टाचार के खिलाफ गाँधीजी जैसे संकल्प लेकर आर-पार की लड़ाई लड़ने की जरूरत है।

महात्मा गाँधी का मानना था कि हमारी संग्रहवृत्ति इन बुराइयों की जड़ में है। वे लिखते हैं, 'हम सब एक तरह से चोर हैं। अगर मैं कोई ऐसी चीज लेता और रखता हूं, जिसकी मुझे अपने किसी तात्कालिक उपयोग के लिये जरूरत नहीं है, तो मैं उसकी दूसरे से चोरी ही करता हूं। अत: हमें अपनी जरूरतों का नियमन करना चाहिये। असंग्रहवृत्ति या अपरिग्रह का अस्तेय (चोरी न करने) के साथ चोली दामन का सम्बन्ध है। अत: चोरी वहीं होगी जहां संग्रहवृत्ति या परिग्रह होगा। सब यदि अपनी जरूरत की चीजों का ही संग्रह करें तो किसी को तंगी महसूस न हो और सबको संतोष हो (मेरे सपनों का भारत पृ. ५८)।' महात्मा गाँधी की आर्थिक समानता और ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त भी भ्रष्टाचार की रोकथाम में अहं भूमिका निभा सकता है। गाँधी की आर्थिक समानता का मतलब है 'जगत् (में सब) के पास समान सम्पत्ति का होना, यानी सबके पास इतनी सम्पत्ति का होना कि जिससे वे अपनी कुदरती आवश्यकताएं पूरी कर सकें। आर्थिक समानता की जड़ में धनिक का ट्रस्टीपन निहित है। इस आदर्श के अनुसार धनिक को अपने पड़ोसी से एक कौड़ी भी ज्यादा रखने का अधिकार नहीं है। इसका अर्थ यह भी नहीं की उसके पास जो ज्यादा है उसे छीन लिया जाय बल्कि जितनी मान्य हो सके उतनी अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के बाद जो पैसा बाकी बचे, उसका वह प्रजा की और से ट्रस्टी बन जाय। जब मनुष्य अपने आपको समाज का सेवक मानेगा तब... उसकी कमाई में शुद्धता आयेगी'। (मेरे सपनों का भारत पृ. ६३, ६४)

पूर्व संम्पादक के लम्बे अवकाश पर चले जाने के कारण 'खोज गांधी की' का प्रस्तुत संयुक्तांक विलम्ब से पाठकों के समक्ष आ रहा है, इसका हमें खेद है। जनवरी २०१४ में सम्पादक के रूप में जिम्मेदारी सँभालने के बाद मेंने इस पर कार्य प्रारम्भ किया परिणामत: जुलाई-दिसम्बर २०१३ का यह सयुक्तांक आपके हाथ में है। आगे से मेरा पूरा प्रयास रहेगा कि 'खोज गांधी की' के सभी अंक समय से आप तक पहुँच सकें।

पत्रिका में गुणवत्ता की दृष्टि से और सुधार लाया जा सके, इसके लिये आपके बहुमूल्य सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

(डॉ.श्रीप्रकाश पाण्डेय)

लोक शिक्षण द्वारा भ्रष्टाचार निवारण

महात्मा गाँधी ने कहा था आर्थिक लाभ की एकांगी खोज, जो नैतिकता का कुछ भी खयाल रखे बिना की जाती है, ईश्वरी कानून के विरुद्ध है। इस देश में पैसा सिर्फ विनियोग का साधन नहीं है, उसे समाज को भ्रष्ट करने के लिये, इन्सानों को खरीदने के लिये उपयोग में लाया जाता है। लोकतंत्र की उखड़ती सासों को जिन्दा रखने के लिए आज भ्रष्टाचार को माध्यम बनाया जा रहा है। दान, सेवा और पुण्य के छद्मवेश में भ्रष्टाचार समाज में प्रतिष्ठा पाने की जुगत में है। ऐसे में उपाय क्या है? प्रस्तुत है लोक शिक्षण के माध्यम से भ्रष्टाचार निवारण के उपाय को बताता प्रसिद्ध गाँधीविद् श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी का यह लेख – ***सम्पादक***

एक अंग्रेज लेखक ने लिखा है, 'हिन्दुस्तान का निवासी सम्पूर्ण धार्मिक है, वह सभी धार्मिक व्यवहार मन से करता है। वह गंगा में धर्म के कारण नहाता है, काशी विश्वनाथ के दर्शन भी धार्मिक भावना से करता है, प्रसाद और तीर्थयात्रा भी धार्मिक भावना से करता है और पाप भी धार्मिक वृत्ति से करता है'।

वह दो के विचारों पर विश्वास करता है – एक व्यक्तिगत और दूसरा सार्वजनिक। वह धर्म और नैतिकता के नाम पर व्यक्तिगत स्वच्छता और सार्वजनिक गंदगी या विभाजित जीवन जीता है। जुआ, ज्योतिष, सट्टा, सौदा और लॉटरी पर उसका विश्वास है। मन्दिर भगवान के नाम से नहीं, बनानेवाले दानदाता के नाम से पहचाने जाते हैं। भगवान के दर्शन जल्दी मिले इसके लिये कहीं-कहीं रिश्वत भी देनी पड़ती है। दर्शन के भी भाव होते हैं। क्रान्ति का सूत्र है कि पाप-पुण्य और व्यसन का व्यापार नहीं होना चाहिये। हमनें उन्हें बाजार में ही नहीं काले बाजार में भी उतारा है। हमारी संस्कृति मच्छरदानी की है। मच्छर न काटे इसके लिये जो मच्छरदानी में सोते हैं, वे यह नहीं जानते कि इससे मच्छर नहीं मरते। जहां मच्छर पैदा होते हैं वहां दवा डालकर उनकी उत्पत्ति को रोकना पड़ता है। बीजों का ही नाश करना पड़ता है। समाज परिवर्तन की राह देखना गलत है, क्योंकि समाज-परिवर्तन के सारे काम विशिष्ट व्यक्तियों ने ही किये हैं। बाद में समाज ने उसे अपनाया है। टैक्सचोर, गुनहगार, भ्रष्टाचारी इनकी प्रतिष्ठा न बढ़े, उन्हें स्थान न मिले, इसकी शुरुआत अपने से ही करनी होती है वरना दूसरों को ब्रह्मज्ञान बताने वाला जड़ पाषाण रह जायेगा।

श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी

जैसा काम भ्रष्ट लोग करते हैं, उसे भ्रष्टाचार कहते हैं और उनका समाज पर प्रभाव नहीं पड़ता, ऐसा पहले माना जाता था। लेकिन आज तो वह शिष्टाचार बन गया है। हर राक्षस की शक्ति भगवान का दिया हुआ वरदान होती है और हर भ्रष्टाचारी का संरक्षण सज्जनों का आधार होता है। सज्जन भी अपना काम निकालने के लिये भ्रष्ट मार्ग का सहारा लेते हैं, भ्रष्टाचारियों की मदद लेते हैं। फिर भ्रष्टाचार को गालियां भी देते हैं। आज भ्रष्टाचार ने हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमें प्रभावित किया है। आज कार्य क्षमता और कार्य कुशलता का अर्थ हुआ काम टालने की कला या होशियारी। कम से कम काम और अधिक से अधिक दाम, इसी को शासकीय नौकरी कहते हैं। सरकारी नौकरी में निहित लोगों को काम करने पर अलग से विदाई (भेंट) की आकांक्षा रहती है। भूमिका ऐसी है कि 'लोकसेवा' या लोगों का काम करना सेवा या सरकारी काम नहीं है। वेतन सरकारी काम के लिये मिलता है, लोकसेवा या लोगों की सेवा के लिये नहीं मिलता। इसलिए जिस किसी का काम हम करते हैं, उसके लिये उनकी ओर से 'कुछ' लेना गलत या अनैतिक प्रतीत नहीं होता। विनोबाजी की भाषा में 'भ्रष्टाचार' शिष्टाचार हो गया है और भ्रष्टाचार की व्याख्या भी बदल गई है। जो रिश्वत लेकर भी काम नहीं करता, वही भ्रष्टाचारी माना जाता है, शेष सब 'सदाचारी' ही हैं।

यह कैसा समाज है, जहां सदाचारी और ईमानदार होना विशिष्ट तथा असामान्य गुण माना जाता है। कानून के क्षेत्र में अच्छे काम के लिये ईनाम नहीं मिलता, क्योंकि वह तो सामान्य नियम है, सभी से अपेक्षित है। बुरे काम के लिये सजा मिलती है। आज मैं ईमानदार हूं, सदाचारी हूं, इसके ढोल बजाये जा रहे हैं। जिस समाज में ईमानदार होना, सामान्य नहीं होता, वहां दम्भ और भ्रष्टाचार सामान्य नियम नहीं होता बल्कि अधिकतर लोग भ्रष्टाचारी ही होते हैं। अगर यह सत्य होगा तो सारा देश भ्रष्टाचारियों या गुनहगारों का नहीं हो सकता। इंग्लैंड में पुरुष के अनैसर्गिक यौन सम्बन्धों को गुनाह नहीं माना जाता है। अत: कानून में से उन धाराओं को रद्द कर दिया गया है। वैसा हमारे देश में भ्रष्टाचार को कानूनी अधिकार दे देना चाहिये। लेकिन यह सही नहीं है।

सारा शहर जानता है भ्रष्टाचार कौन करता है, सिर्फ उसका पता न्यायालय को न चले, इसके सबूत न मिलें, इसलिये पुलिस से लेकर सारा समाज कोशिश करता रहता है। भ्रष्टाचार के विशिष्ट सबूत नहीं मिलते, लेकिन हम रोज 'यह जाना माना भ्रष्टाचारी है' ऐसे शब्द का प्रयोग करते हैं। ऐसी सार्वजनिक आम भावना का महत्त्व होना चाहिये। आम आदमी के मन में व्यक्ति के प्रति जो ख्याति या बदनामी होती है, वह अपने आप में काफी नहीं मानी जानी चाहिये, क्योंकि बिना आग का धुआँ नहीं होता। भ्रष्टाचार कोई गवाह रखकर नहीं करता। इसलिये स्नेह सम्मेलन या अन्य कार्यक्रमों में ऐसे इन्सान को बुलाना ही नहीं चाहिये, चाहे वह कितना ही बड़ा दानदाता क्यों न हो। इससे उसे सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती है। प्रतिष्ठा कानून का पालन करने वाले की होनी चाहिये। इस देश में पैसा सिर्फ विनियोग का साधन नहीं है, उसे समाज को भ्रष्ट करने के लिये, इन्सानों को खरीदने के लिये उपयोग में लाया जाता है। दान, पूँजीवाद कालाबाजार के रक्षक हैं, भ्रष्टाचार को प्रतिष्ठा दिलाने का एक साधन है।

भ्रष्टाचार की 'गंगोत्री' राजनीतिक पक्ष है। चुनाव के लिये सभी राजनीतिक पक्ष पैसा इकट्ठा करते हैं। चुनाव में अपार धनराशि खर्च करना और वोट खरीदना सामान्य रिवाज बन रहा है। मतदाताओं को भ्रष्ट बनाया जाता है। कोई भी पक्ष सत्ता में आये, जयप्रकाश नारायण की भाषा में 'नागनाथ की जगह सांपनाथ' को लाने जैसी बात होती है। इसलिये चुनावी प्रक्रिया सम्बन्धी कानून में परिवर्तन तो करना ही पड़ेगा। हर राजनीतिक दल को अपने ही दल के अन्तर्गत एक स्वतन्त्र न्यायाधिकरण नियुक्त करना चाहिये, जिससे पक्षजन भ्रष्टाचार की शिकायतें भेज सकें। इसे न्यायाधीश की सिफारिश कार्य समिति द्वारा

अवश्य स्वीकृत किया जाना चाहिये और उसके मुताबिक कार्यवाही होनी चाहिये। वैसे कुछ मामले न्यायाधिकरण तक आये और कुछ लोगों को उल्लेखनीय दण्ड मिला तो उसका दूर तक असर होगा, भले ही संगठन के भीतर सत्ता-संतुलन कुछ गड़बड़ा जाय।

जिन्हें कोई पद प्राप्त हो, उन्हें किसी प्रकार का लाइसेंस या परमिट लेने से रोक दिया जाना चाहिये और जीवनावश्यक वस्तुओं की सलाहकार समितियों की सदस्यता भी उन्हें नहीं मिलनी चाहिये। इतना ही नहीं, उन्हें किसी भी अधिकारी से इन मामलों में सिफारिश करने से भी रोकना चाहिये। उन्हें शिक्षा, संस्था, शराब की दुकानें, शक्कर के कारखाने जैसी संस्थाओं से भी दूर रखना चाहिये। नागरिकों की मुहल्ला सदाचार समितियां बनाकर निगरानी रखनी चाहिये। उसमें ऐसे लोग होने चाहिये जो चुनाव की राजनीति से दूर रहें।

आज आवश्यक है कि भावनाशील युवक-युवतियां भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठायें और कार्यवाही करने का साहस दिखायें। बड़े किसान और व्यापारियों के लड़के-लड़कियां अपने पिता तथा परिवार की जमाखोरी और कालाबाजारी के विरुद्ध, अफसरों के बेटे-बेटियां, मन्त्रियों के लड़के-लड़कियां अपने पिता के भ्रष्टाचार के विरुद्ध सत्याग्रह करें। ऐसे पैसों पर न जीयें, उनका जीवन में उपयोग न करें। इससे आत्मशुद्धि के द्वारा समाज का वातावरण शुद्ध होने में मदद मिलेगी। विद्यार्थी अपने जीवन से भ्रष्टाचार दूर करने का संकल्प करें। परीक्षा में चोरी नहीं, पैसे देकर प्रवेश नहीं, बिना टिकट यात्रा नहीं, तोड़फोड नहीं, दहेज न तो लें न ही दें। शादी तथा उत्सवों पर खर्च न करें क्योंकि वह भयंकर खर्च राजद्रोह है, भ्रष्टाचार की जननी है। जयप्रकाशजी ने युवकों से कहा था, हर मंच पर भ्रष्टाचार का निषेध करो। आखिर देश की मिट्टी की खाद बनोगे तभी उसमें आजादी के फूल खिलेंगे।

सभी राजनीतिक दलों को एक आचार संहिता बनाकर उसका पालन करना चाहिये। उम्मीदवार नहीं चरित्रवान प्रतिनिधि चुनें जिसे पैसे और सत्ता की कोई लालसा न हो। वह पक्षनिष्ठ कम लोकनिष्ठ अधिक हो। जिस पक्ष में लोकनीति के मूल्य हों, जिसका सदाचार पर ही विश्वास हो, ऐसे पक्ष को मान्यता मिलनी चाहिये। सभी चुनाव एक ही समय में हों। भ्रष्ट लोकप्रतिनिधि को वापस बुलाने का हक जनता को मिलना चाहिये।

आज तो लोकतन्त्र भी नीलाम हो रहा है, क्योंकि सन्दर्भ पूंजीवाद का है। यह लोकतन्त्र पूंजीवाद की बेटी है। आज के लोकतन्त्र को विनोबाजी ने 'राक्षस-नीति' कहा था। जिला स्तर पर सामंजस्य स्थापित करनेवाली सज्जनों की समितियां हों। जन प्रतिनिधि की पंचायत जैसी विकेन्द्रित व्यवस्था होगी तो नौकरशाही में भी भ्रष्टाचार नहीं रहेगा। जनता का प्रत्यक्ष शासन एवं सरकारी कर्मचारियों के नाम पर जनता तथा उनके द्वारा चुनी गई संस्थाओं का प्रत्यक्ष निरीक्षण और नियन्त्रण होना चाहिये। आज लोकशिक्षण द्वारा भ्रष्टाचार के खिलाफ वातावरण निर्माण करना आवश्यक है।

-चन्द्रशेखर धर्माधिकारी

सुविचार

तुम्हारे जेब में एक पैसा है, वह कहां से और कैसे आया है, वह अपने से पूछो। उस कहानी से बहुत सीखोगे।

(बापू के आशीर्वाद (रोज के विचार) पृष्ठ १८८ से साभार)

– महात्मा गाँधी

गाँधीजी के एकादशव्रत

१. **अहिंसा:** अहिंसा का अर्थ है हिंसा न करना। किन्तु हिंसा सिर्फ किसी को मारना या किसी की हत्या करना नहीं है, बल्कि किसी के प्रति बुरे विचार लाना, क्रोध करना, द्वेष रखना भी हिंसा है। अत: इनसे दूर रहना अहिंसा है।

२. **सत्य:** सत्य शब्द सत् से बना है जिसका अर्थ है- होना या अस्तित्व होना। परमेश्वर का सही नाम ही सत् या सत्य है। इसकी जगह सत्य ही परमेश्वर है, ऐसा कहना गलत नहीं होगा। सामान्यतया हम सत्य से सच बोलना, इतना ही समझते हैं, पर विचार में तथा व्यवहार में भी उसका वर्तन करना सत्य है।

३. **अस्तेय:** अस्तेय का अर्थ है चोरी न करना या बिना इजाजत किसी की वस्तु को लेना चोरी है। अपनी जरूरत से अधिक वस्तु रखना भी चोरी है।

४. **ब्रह्मचर्य:** आमतौर पर ब्रह्मचर्य का अर्थ जननेन्द्रिय पर केवल शारीरिक नियंत्रण माना जाता है। किन्तु उसका सच्चा अर्थ है सभी इन्द्रियों पर सम्पूर्ण नियंत्रण। ब्रह्मचर्य का अर्थ ब्रह्म की खोज में चर्या अर्थात् वह आचरण जिससे ईश्वर के साथ सम्पर्क स्थापित होता है, ब्रह्मचर्य है।

५. **असंग्रह (अपरिग्रह):** जिस वस्तु की आवश्यकता न हो उसका संग्रह न करना असंग्रह व्रत है। ज्यों-ज्यों हम परिग्रह घटाते जाते हैं, त्यों-त्यों सच्चा सुख और संतोष बढ़ता जाता है।

६. **शरीर-श्रम:** शरीर-श्रम मनुष्य मात्र के लिये अनिवार्य है। शरीर श्रम अंग्रेजी शब्द 'ब्रेडलेबर' का हिन्दी अनुवाद है - अर्थात् रोटी के लिये श्रम। जो श्रम या मजदूरी नहीं करता उसे खाने का हक नहीं है।

७. **अस्वाद:** अस्वाद का अर्थ है - खान-पान पर संयम। भोजन सिर्फ शरीर को जिन्दा रखने के लिये किया जाना चाहिये, भोग-विलास के लिये नहीं।

८. **अभय:** अभय का अर्थ है तमाम बाहरी भयों से मुक्ति। काम, क्रोध, मोह आदि हमारे आन्तरिक भय हैं, इन पर यदि हम विजय पा लेते हैं तो बाहरी भय अपने आप समाप्त हो जायेंगे।

९. **सर्वधर्म-समभाव:** संसार में जितने भी प्रचलित धर्म हैं, वे सब सत्य को प्रकट करते हैं। अत: हमें सभी धर्मों के प्रति सहिष्णु होना चाहिये।

१०. **स्वदेशी:** स्वदेशी आत्मा का व्रत है। अपने पास के लोगों की सेवा में लगे रहना, ओत-प्रोत होना स्वदेशी धर्म है। स्वदेशी में स्वार्थ का स्थान नहीं है। पूर्ण स्वदेशी में किसी का द्वेष नहीं है।

११. **स्पर्श भावना:** स्पर्श भावना अथवा छुआछूत का भेद न रखना। छुआछूत धर्म नहीं अधर्म है। अछूतपन हिन्दू धर्म का अंग नहीं अपितु हिन्दू धर्म में पैठी हुई एक सड़न है जिसे हमें दूर करना चाहिये।

मेरा वर्णाश्रम धर्म

हिन्दू संस्कृति अपने वर्णाश्रम धर्म के लिये जानी जाती है। भारतीय समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों में विभक्त किया गया है। ऋग्वेद (पुरुष सूक्त) में विराट पुरुष (ईश्वर) के मुख से ब्राह्मण, भुजा से क्षत्रिय, उरु से वैश्य और पैर से शूद्र की उत्पत्ति बतायी गई है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत बाहु राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद् वैश्य पद्‌भ्याम् शूद्रो अजायतः। (ऋ. १०.९०.१२)

गीता गुण और कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था करती है- चातुर्वर्ण मयासृष्टं गुण कर्म विभागशः' गीता ४-१३। इसप्रकार गुण, कर्म के आधार पर वर्णों का विधान किया गया है। चार वर्णों में ब्राह्मण वह है जो अपनी विद्या, बुद्धि और ज्ञान से समाज के अज्ञान और मूढ़ता को दूर करे। जो सारे समाज की रक्षा करे वह क्षत्रिय। कृषि, वाणिज्य और गो रक्षा द्वारा समाज को आर्थिक रूप से सम्पन्न बनानेवाला-वैश्य तथा तीनों वर्णों की सेवा, सहयोग और सहायता करनेवाला शूद्र। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये ही गुण-कर्म और स्वभाव से चारों वर्णों की स्थापना की गयी है। महात्मा गांधी जब दक्षिण भारत (कुडालोर, तंजोर, चेट्टीनाड, विरुधनगर और टिन्नेवेल्ली) के दौरे पर थे तो उनके सामने ब्राह्मण-अब्राह्मण का प्रश्न आया था और उसका समाधान भी उन्होंने सुझाया था। प्रस्तुत है महादेव देसाई द्वारा संकलित प्रश्नोत्तरों सहित वर्णाश्रम से सम्बन्धित महात्मा गाँधी की बेबाक टिप्पणी – **सम्पादक**

वर्णाश्रम धर्म हिन्दू धर्म की संसार को अपूर्व देन है। जहांतक मुझे हिन्दू धर्म का जो भी ज्ञान है, उसके आधार पर मैं कह सकता हूं कि 'वर्ण' का अर्थ अत्यन्त सरल है। इसका सीधा-सादा अर्थ है कि हम सब अपने वंश और परम्परागत काम को सिर्फ जीविका के लिये ही, यदि वह नीति के मूल सिद्धान्तों के विरुद्ध न हो, तो करें। इस तरह वर्ण एक प्रकार से वंशानुक्रम का नियम है। वर्णधर्म हिन्दूधर्म पर ऊपर से लादा गया कोई सिद्धांत नहीं है अपितु प्रयत्न कर ढूंढ निकाला गया है। यह कुछ व्यक्तियों द्वारा ईजाद की गयी चीज नहीं है बल्कि जैसे कि न्यूटन के पता लगाने के पहले भी संसार के कण-कण में गुरुत्वाकर्षण जारी था और न्यूटन ने प्रकृति की इस प्रवृत्ति का पता भर लगाया था उसी तरह यह भी प्रकृति का नियम है।[१] यदि हम सभी धर्मों में बतलाये मनुष्य के लक्षण को मानें तो यह हमारे जीवन का नियम है। परमात्मा की सारी सृष्टि में एक मनुष्य ही ऐसा बनाया गया है जो उसे पहचाने। इस लिये मनुष्य जीवन का उद्देश्य अधिकाधिक धनोपार्जन नहीं बल्कि उसका उद्देश्य है दिनों दिन अपने बनाने वाले के और भी निकट पहुंचना। इसी परिभाषा से हमारे प्राचीन ऋषियों ने हमारे जीवन का यह नियम ढूंढ निकाला था। यदि हम सभी वर्णाश्रम धर्म का पालन करें तो हमारी सांसारिक अभिलाषायें मर्यादित हो जायेंगी और हमारी शक्ति उन विशाल क्षेत्रों की खोज के लिये मुक्त हो जायेगी जिसके जरिये हम परमात्मा की खोज कर सकते हैं। आज जो हम वर्ण धर्म पाल रहे हैं वह मेरे बतलाये वर्ण धर्म का अत्यन्त भ्रष्ट रूप है। आम तौर पर वर्ण का निर्णय जन्म से किया जाता है, एक हद तक कर्म से भी किया जाता है। ब्राह्मण का लड़का ब्राह्मण होकर ब्राह्मण तो कहलाएगा मगर बड़ा होने पर उसमें ब्राह्मण के लक्षण या गुण न दिखें तो वह ब्राह्मण नहीं माना जायेगा। इसके विपरीत जो दूसरे वर्ण में पैदा हुआ है, और उसमें ब्राह्मण के लक्षण हैं, तो वह भले ही खुद को ब्राह्मण न कहे तो भी ब्राह्मण मानने के लायक होगा। इस धर्म के अनुसार यदि दुनियाँ चले तो सब जगह संतोष फैले, ईर्ष्या मिटे और झूठी होड़ मिटे। लेकिन वर्ण अगर धर्म बन जाये और अधिकार न रहे, वर्ण-वर्ण के बीच भेद न रहे तो सब वर्ण बराबर हो जांय। बहुत समय से हिन्दू धर्म के नाम पर ऊँच-नीच के भेद घुस गये हैं। यह वर्णधर्म का टेढ़ा-मेढ़ा रूप है। हमारे पुरखों ने कठिन तपस्या से जिस बड़े कानून को ढूंढ़ निकाला था और भरसक जिसपर अमल किया था, उसका अनर्थ करके आज हमनें उसे दुनियाँ के लिए हंसी का पात्र बना दिया है। यदि वह भ्रष्ट हो गया है तो जिस तरह असत्य को ही सत्य बना घूमते देखकर हम सत्य से घृणा नहीं करने लगते बल्कि हम असत्य में से सत्य को ढूंढ निकालते हैं और उसे पकड़े रहते हैं, उसी तरह वर्ण धर्म के नाम से प्रचलित उसके भ्रष्ट स्वरूप को नष्ट करके, हिन्दू समाज को इस बुरी स्थिति से शुद्धि कर सकते हैं। वर्ण का जाति प्रथा से कोई सम्बन्ध नहीं है। हिन्दू धर्म में जाति आज जिस रूप में मौजूद है, वह एक ऐसी बेहूदा चीज है, जिसका वक्त गुज़र गया है।

वर्ण धर्म में आश्रम का आना जरूरी है। किन्तु आज अगर वर्ण-धर्म भ्रष्ट हो गया है तो आश्रम धर्म नष्ट ही हो गया है। 'आश्रम' का अर्थ है मनुष्य के जीवन के चार विभाग - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। ब्रह्मचर्य आश्रम का नियम है कि वे दूसरे यानी गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर सकते हैं जिन्होंने कम से कम पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया हो। चूंकि हिन्दू धर्म की सारी कल्पना ही मनुष्य को अच्छा बनाने की, उसे अपने सृष्टिकर्ता के निकट पहुंचाने की है, इसलिये ऋषियों ने गृहस्थाश्रम की भी एक मर्यादा बांध दी और हमपर वानप्रस्थ और संन्यास का बन्धन रखा। मगर आज सारे हिन्दुस्तान में एक भी सच्चे ब्रह्मचारी, गृहस्थ को ढूंढ निकालना असम्भव है, वानप्रस्थ और संन्यास की तो कोई बात ही नहीं है। हम अपनी बुद्धिमत्ता में भले ही इस योजना पर हंस लें किन्तु मुझे तो इसमें कोई शक नहीं कि हिन्दू धर्म की सफलता का यही एक कारण है। जैसे पश्चिम के लोगों ने भौतिक क्षेत्र में अद्‌भुत आविष्कार किए हैं, ठीक उसी तरह हिन्दू धर्म ने धर्म और आत्मा संबन्धी बातों में उनसे भी अधिक विलक्षण आविष्कार किये हैं। परन्तु उन महान् खोजों की तरफ हमारा ध्यान नहीं जाता। मुझे पाश्चात्य देशों की उस प्रगति का मोह नहीं है। सच पूछा जाये तो ऐसा लगता है कि जैसे ईश्वर ने सोच-समझकर बुद्धि पूर्वक उसे इस ढंग की प्रगति करने से रोका है ताकि वह भौतिकवाद की बाढ़ को रोकने का अपना खास मिशन पूरा कर सके। आखिर हिन्दू धर्म में कोई ऐसी विशेषता अवश्य है जिसने अब तक उसे जीवित रखा है। हिन्दू सभ्यता के देखते-देखते मिश्र, सीरिया और बैबीलोनियां की सभ्यतायें मर मिटीं। अपने चारों ओर नजर डालिए - रोम और ईरान कहाँ हैं? क्या आपको कहीं भी गिबन की इटली या यूँ कहिए प्राचीन रोम का नामोनिशान मिलता है? यूनान चले जाइए। कहां है वह विश्वविख्यात ऐटिक सभ्यता? फिर भारत में आइए। अत्यन्त प्राचीन लेखों को देख जाइए और फिर अपने चारों तरफ नजर डालिए; आपको कहना पड़ेगा: हाँ, मुझे प्राचीन भारत अब भी दिखाई दे रहा है।[२] ईसाई सभ्यता तो अभी दो हजार वर्ष की है। इस्लामी सभ्यता तो अभी कल की है। दोनों महान हैं, मगर मेरी नम्र

मति में अभी बन ही रही हैं। जैसे-जैसे समय बीत रहा है हमारा विश्वास बढ़ता जा रहा है कि वर्ण-धर्म ही मनुष्य का जीवन धर्म है। यह ईसाई और इस्लाम धर्म के लिये भी उतना ही जरूरी है जितना कि हिन्दू धर्म जिसकी रक्षा इसी से हुई है।[३]

वर्णाश्रम धर्म एक सार्वदेशिक नियम है जिसे हिन्दूधर्म में विस्तार से कहा गया है। यह आध्यात्मिक अर्थशास्त्र का नियम है। पश्चिम के देशों और इस्लाम को अन्जाने उसका पालन करना पड़ रहा है। इसमें बड़प्पन और छुटपन की कोई बात नहीं है। खाने, पीने और विवाह के रस्म वर्णाश्रम धर्म के आवश्यक अंग नहीं हैं। मेरे और आपके पूर्वजों ने यह नियम ढूंढा था। उन्होंने देखा कि अगर अपने जीवन का सबसे अच्छा भाग ईश्वर की सेवा में, दुनियाँ की सेवा में लगाना है, अपनी सेवा में नहीं, तो उन्हें वंश परम्परा का नियम मानना ही पड़ेगा। मनुष्य की शक्तियों को ऊंचे कार्यों में लगाने के लिये यह नियम बनाया गया है। मेरे वर्णाश्रम धर्म के अनुसार, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी जो कोई मुझे स्वच्छ भोजन दे सके, उसके साथ मैं खा सकता हूं। मेरे वर्णाश्रम के अनुसार मेरे ही मकान में मेरी लड़की के तौर पर एक अन्त्यज बालिका के लिये जगह है। मेरे वर्णाश्रम में कई अछूत परिवारों को भी जगह है जिनके साथ मैं खाना खाता हूं, और उनके साथ खाना बड़ी बात है। मेरा वर्णाश्रम संसार के बड़े से बड़े राजा के आगे सिर झुकाने से इन्कार करता है, मगर जहां कहीं मैं ज्ञान देखता हूं, पवित्रता पाता हूं, जिस किसी आदमी में मुझे ईश्वर के दर्शन होते हैं, वहां पर नम्रता से सिर झुकाने को मेरा वर्णाश्रम मुझे लाचार करता है। ब्राह्मणों को पेट भरकर गालियां दीजिये मगर ब्राह्मणत्व को कभी नहीं। इस आशंका के होते हुए भी कि आप मेरा मतलब गलत समझेंगे, मैं आपसे यह कहने का साहस करता हूं कि ब्राह्मणों को कई पापों के लिये प्रायश्चित्त करना भले ही पड़े मगर फिर भी हिन्दुस्तान में ऐसे ब्राह्मण हैं जो हिन्दू धर्म की प्रगति को देख रहे हैं, और अपनी सारी पवित्रता, तपश्चर्या से उसकी रक्षा करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्हें आप शायद नहीं जानते। वे शोहरत की परवाह भी नहीं करते। वे इनाम की आशा नहीं रखते। वे तो अपने काम से ही संतुष्ट हैं।[४]

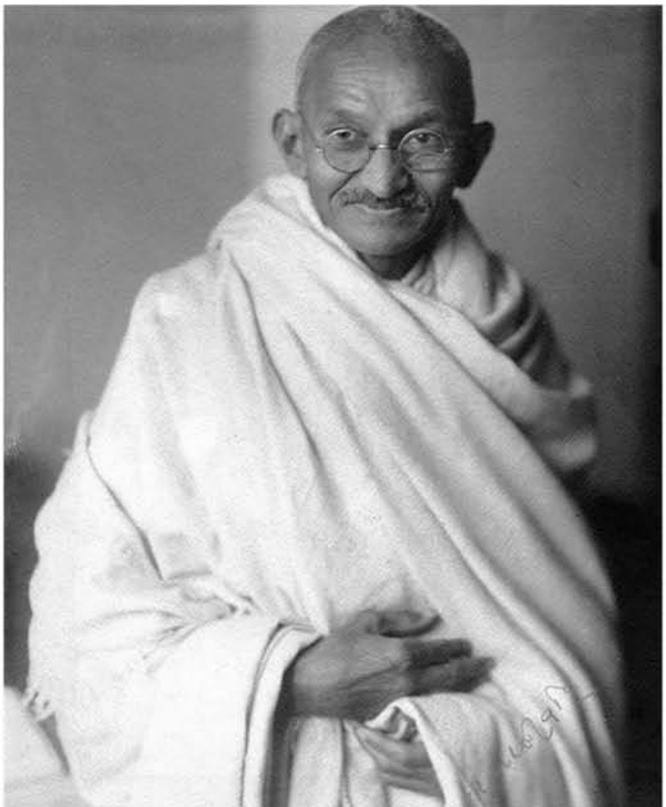
महात्मा गाँधी

तंजोर के अपने उद्बोधन में मैंने बताया था कि मेरी समझ में कोई मनुष्य न कर्म से न धर्म से बड़ा बन जाता है। मेरा विश्वास तो अद्वैत के मूलाधार पर टिका है। मेरे अद्वैत के अनुसार कभी कोई किसी दशा में बड़ा नहीं बनता, जन्म के समय सभी समान, बराबर होते हैं। चाहे हिन्दुस्तान में पैदा हों, या इंग्लैण्ड या अमेरिका में, सभी आदमियों में एक ही आत्मा है और चूंकि मैं इस समानता में विश्वास करता हूं, मैं बड़प्पन की इस खामाखयाली से लड़ता हूं जो हमारे कितने ही शासक अपनाये हुए हैं। दक्षिण अफ्रीका में मैंने इस बड़प्पन की लड़ाई एक-एक करके लड़ी थी और इसीलिये मुझे अपने आपको झाड़ू देनेवाला भंगी, सूत कातने वाला जुलाहा, किसान और मजदूर कहने में आनन्द आता है। जहां कहीं ब्राह्मणों ने विद्याबल या जन्म के नाम पर बड़प्पन का दावा किया है, मैंने उनसे लोहा लिया है। भगवद्गीता में मेरे विचार का यथेष्ट समर्थन है और इसलिये हर एक अब्राह्मण के साथ हूं जो बड़प्पन के इस असुर से लड़ता है, चाहे वह ब्राह्मणों का दावा हो या और किसी का। चार वर्णों के लिये वेद में शरीर के चार अंगों से उपमा दी गई है। शरीर के अंगों में यह ऊँच-नीच का भेद नहीं होता। यदि अंगों में यह भाव हो तो शरीररूपी राष्ट्र के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। अत: न तो कोई ऊँचा है, न कोई नीच, न कोई बड़ा है, न कोई छोटा। जो बड़प्पन का दावा करता है वह आदमी रह ही नहीं जाता, मेरा यह मत है।

इन सब विश्वासों के होते हुए भी वर्णाश्रम धर्म में मेरा दृढ़ विश्वास है। वर्णाश्रम धर्म एक नियम है जिसे हम आप लाख इन्कार करें, मिटा नहीं सकते। वर्णाश्रम धर्म नम्रता है। जब मैं यह कहता हूं कि सभी स्त्री पुरुष समान हैं, तो मेरा यह आशय कथमपि नहीं होता कि माता-पिता के गुण-दोष लोगों को विरासत में नहीं मिलते। मेरा विश्वास है कि जिसप्रकार सभी को एक खास शरीर मिलता है, वैसे ही माता-पिता के गुण-दोष भी मिलते हैं, और इस बात को मानना अपनी शक्ति का संचय करना है। यदि कोई इस बात को कबूल करके चले तो उसकी भौतिक अभिलाषाओं पर लगाम लग जायेगा और इस प्रकार आध्यात्मिक शोध और विकास के लिये हमारी शक्तियां मुक्त हो जायेंगी।[५]

प्रश्न: आखिर आप वर्णधर्म पर इतना जोर क्यों देते हैं? क्या आप वर्तमान जाति-प्रथा का समर्थन कर सकते हैं? वर्ण की आप क्या परिभाषा करेंगे?

उत्तर: वर्ण के मायनें हैं - किसी आदमी के पेशे का पहले से ही निश्चय हो जाना। वर्णधर्म यह है कि हर एक आदमी अपनी आजीविका के लिए अपने बाप का ही पेशा अख्तियार करे। हर एक लड़का स्वभाव से ही अपने बाप के ही वर्ण या रंग का होता है और अपने बाप का ही पेशा चुनता है। इस तरह से वर्ण एक प्रकार से वंशानुक्रम का नियम है।[५]

प्रश्न: अगर कोई आदमी ऐसा पेशा अख्तियार करता है जो उसका जन्मगत नहीं है तो वह किस वर्ण में गिना जायेगा?

उत्तर: हिन्दू धर्म के अनुसार उसका वर्ण तो वही है जिसमें उसका जन्म हुआ है मगर अपने वर्ण का धर्म-पालन नहीं करने से वह अपने प्रति अन्याय करता है और पतित हो जाता है।

प्रश्नः अगर शूद्र ब्राह्मण का कर्म करे तो क्या वह पतित हो जायेगा?

उत्तरः शूद्र को भी विद्या पढ़ने का वही हक है जो ब्राह्मण को है, मगर शूद्र अगर विद्या-दान से रोजी पैदा करेगा तो वह पतित हो जायेगा। प्राचीन काल में व्यापारिक संघ अपने आप ही चलते थे और किसी पेशे के सब आदमियों को पालन करने का अलिखित नियम था। सौ वर्ष पहले बढ़ई का लड़का वकील होना कभी नहीं चाहता था। आज वह चाहता है क्योंकि वकालत के जरिए धन चुराना उसे सबसे सहल मालूम पड़ता है। वकील समझता है कि अपने दिमाग से काम करने के लिए उसे १५ हजार रुपये लेने ही चाहिए और हकीम साहेब जैसे चिकित्सक अपनी सलाह के लिए एक हजार रुपये रोजाना लेना जरूरी समझते हैं।

प्रश्नः मगर क्या कोई अपने मन का पेशा अख्तियार ही न करे?

उत्तरः मगर उसका मन तो अपने बापदादों के ही पेशे की और चलना चाहिए। उसे अख्तियार करने में कोई बुराई नहीं है, उलटे यह बड़ा ही अच्छा होगा। आज तो हम केवल अस्वाभाविकता ही देखते हैं और इसीलिए समाज में इतना जोरो जुल्म, और बैर फूट है। आज बढ़इयों के हजारों लड़के हैं जो अपने बापदादों का काम कर रहे हैं मगर बढ़इयों के सौ लड़के भी आज वकालत नहीं कर रहे होंगे। पुराने जमाने में दूसरों के धन-माल पर कब्जा जमाने का लोभ नहीं था। उदाहरण के लिए सिसरो के जमाने में वकालत का काम अवैतनिक था और किसी बुद्धिमान बढ़ई के लिए, रुपया कमाने के लिए नहीं बल्कि सेवार्थ वकालत करना हमेशा योग्य होगा। पीछे जाकर नाम और धन की उच्चाभिलाषा आयी। पहले के चिकित्सक समाज की सेवा करते थे और उन्हें समाज जो कुछ दे देता उसी पर संतुष्ट रहते थे, मगर अब वे तिजारती बन गये हैं, बल्कि समाज के लिए खतरनाक भी हो रहे हैं। जब कि असल मकसद खिदमत (सेवा) की ही होती थी, वकालत और डाक्टरी को उदार पेशा कहा जाता था।

प्रश्नः मगर यह सब कुछ तो आदर्श परिस्थिति की बातें हैं। आज जब कि सब कोई धन कमाने पर कमर कसे हुए हैं, आप कौन सा रास्ता सुझाते हैं?

उत्तरः यह तो आपने बहुत बढ़ा कर बात कही है। जरा स्कूलों और कॉलेजों में पढ़नेवाले लड़कों की तायदाद देखिए और फिर पढ़े लिखों के पेशे अख्तियार करनेवालों का अनुपात तो निकालिए। सभी डाकेजनी नहीं कर सकते और आज की हलचल तो डाकेजनी के लिए ही है। आखिर कितने आदमी वकील या सरकारी नौकर बन सकते हैं? जो लोग उचित तरीकों से धन पैदा करने में लगे हुए हैं, वे वैश्य हैं और उनका भी पेशा जब डाकेजनी का हो जाता है तो घृणित बन जाता है। लाखों करोड़पति तो हो नहीं सकते।

प्रश्नः आप कहते रहे हैं कि वर्णधर्म हमारी भौतिक इच्छाओं पर अंकुश रखता है। यह किस प्रकार होता है?

उत्तरः जब मैं अपने बाप का ही धन्धा करता हूँ, तो मुझे उसको सीखने के लिए स्कूल में जाने की भी जरूरत नहीं है और इस प्रकार मेरी मानसिक शक्ति आध्यात्मिक खोजों के लिए मुक्त हो जाती है क्योंकि मेरी रोजी निश्चित हो जाती है। जब मैं दूसरे धंधों पर मन लगाता हूँ तो आत्म-प्राप्ति की अपनी शक्ति को बेच देता हूँ यानी एक कानी कौड़ी में अपनी आत्मा को बेच देता हूँ।

प्रश्नः आप आध्यात्मिक अभ्यासों के लिए शक्ति मुक्त कर देने की बात करते हैं। उधर जो लोग अपने बापदादों का धन्धा कर रहे हैं, उनमें कोई आध्यात्मिक संस्कृति है ही नहीं। उनका वर्ण ही उन्हें इसके अयोग्य बना डालता है।

उत्तरः हम वर्ण की विकृत भावनाओं को लेकर बातें कर रहे हैं। जब वर्णधर्म का पालन सचमुच में होता था, हमें आध्यात्मिक अभ्यासों के लिए काफी समय था। अब भी आप दूर के गांवों में जाइए और देखिए कि शहरवालों की बनिस्वत उनमें कितनी अधिक आध्यात्मिक संस्कृति है। ये शहरवाले तो आत्मा का नाम ही नहीं जानते।

मगर आपने तो इस युग का प्रधान दोष ही ढूँढ निकाला है। हम वह बनने की कोशिश न करें जो सब कोई नहीं हो सकते। यदि हर कोई गीता नहीं पढ़ सकता तो मैं गीता पढ़ना भी नहीं चाहूँ। इसीलिए मेरा सारा हृदय धन पैदा करने के लिए अंग्रेजी पढ़ने के विरुद्ध उबल उठता है। इसलिए हमें अपना सामाजिक जीवन इस तरह का बनाना होगा जिसमें देश के करोड़ों आदमियों को वह फुर्सत मिल सके जो हम आज मुट्ठी भर आदमी ही भोगते हैं और जब तक हम वर्णधर्म का पालन नहीं करते वह होने वाला नहीं है।

प्रश्नः अगर हम एक ही सवाल बार-बार पूछें तो आप हमें क्षमा करेंगे। हम इसे ठीक-ठीक समझना चाहते हैं। अलग-अलग समयों पर अलग-अलग धन्धा करने वालों का कौन सा वर्ण होगा?

उत्तरः जब तक वह अपने बाप के धन्धे से ही अपना पेट पालता हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ सकता है। मगर यदि धन के लिए अपना पेशा बार-बार बदलता हो, तो वह वर्ण से पतित हो जाता है।

प्रश्नः किसी शूद्र में ब्राह्मण के सभी गुण हों, मगर वह क्या ब्राह्मण नहीं कहा जा सकता?

उत्तरः इस जन्म में वह ब्राह्मण नहीं कहला सकता और जिस वर्ण में उसका जन्म नहीं हुआ हो, उसका दावा नहीं करना उसके लिए अच्छा ही होगा। यह सच्ची नम्रता का चिह्न है।

प्रश्नः आप क्या यह मानते हैं कि वर्ण संबन्धी गुण वंश विरासत से मिलते हैं, खुद पैदा नहीं किये जा सकते?

उत्तरः वे पैदा किये जा सकते हैं। विरासत में मिले गुणों में वृद्धि की जा सकती है और नये पैदा किये जा सकते हैं। मगर धनप्राप्ति के नये रास्ते हमें नहीं ढूँढने चाहिए, ढूँढने की जरूरत ही नहीं है। हमें तो अपने बापदादों से जो मिला है उसी में तब तक संतुष्ट रहना चाहिए जब तक कि वह पवित्र हो।[६]

संदर्भ -

१. नवजीवन ११.१२.२७

२. मेराधर्म पृ. १८८

३. यंग इंडिया- ३ नवम्बर १९२७

४. वही - उद्धृत 'हिन्दी नवजीवन', अंक ७, पृ. ५१

५. हिन्दी नवजीवन, अंक १५, पृ. ११३

६ वही, अंक १५, पृ. ११४

सुविचार

मैं हिन्दुत्व के प्रति वही भावना रखता हूँ जो अपनी पत्नी के प्रति। उसके दोष जानकर भी मैं उससे अलग नहीं हो सकता।

(गाँधीजी की सूक्तियाँ, पृष्ठ १२१ से साभार)

- महात्मा गाँधी

चोरी और प्रायश्चित्त

महात्मा गाँधी का सबसे बड़ा गुण था उनकी स्वीकारोक्ति। अपने पूरे जीवन में उन्होंने जो भी गलतियां कीं, बड़ी ईमानदारी से उन्होंने उन्हें स्वीकारा और उनकी पुनरावृत्ति न हो सके इसके लिये उन्होंने प्रायश्चित्त के साथ-साथ दृढ़प्रतिज्ञता को भी अपनाया। सामान्यतया यह गुण सबमें नहीं होता, क्योंकि इसके लिये बहुत बड़े साहस की आवश्यकता होती है जिसका सबमें सद्भाव नहीं होता। स्वकीय त्रुटियों की स्वीकारोक्ति गाँधीजी के अन्य गुणों में से एक है जो उन्हें दूसरों से अलग करती है। संस्थान के संस्थापक डॉ. भवरलालजी जैन की हार्दिक इच्छा के अनुसार 'सत्य के प्रयोग' की अगली कड़ी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। – ***सम्पादक***

माँसाहार के समय के और उससे पहले के कुछ दोषों का वर्णन अभी रह गया है। ये दोष विवाह से पहले के अथवा उसके तुरन्त बाद के हैं।

अपने एक रिश्तेदार के साथ मुझे बीड़ी पीने का शौक लगा। हमारे पास पैसे नहीं थे। हम दोनों में से किसी का यह ख्याल तो नहीं था कि बीड़ी पीने में कोई फायदा है, अथवा गन्ध में आनन्द है। पर हमें लगा सिर्फ धुआँ उड़ाने में ही कुछ मजा है। मेरे काकाजी को बीड़ी पीने की आदत थी। उन्हें और दूसरों को धुआँ उड़ाते देखकर हमें भी बीड़ी फूंकने की इच्छा हुई। गाँठ में पैसे तो थे नहीं, इसलिए काकाजी पीने के बाद बीड़ी के जो ठूँठ फेंक दिया करते, हमनें उन्हें चुराना शुरू किया।

पर बीड़ी के ये ठूँठ हर समय निकल नहीं सकते थे, और उनमें से बहुत धुआँ भी नहीं निकलता था। इसलिए नौकर की जेब में पड़े दो-चार पैसों में से हमनें एकाध पैसा चुराने की आदत डाली और हम बीड़ी खरीदने लगे। पर सवाल यह पैदा हुआ कि उसे संभाल कर रखें कहाँ। हम जानते थे कि बड़ों के देखते तो बीड़ी पी ही नहीं सकते। जैसे-तैसे दो-चार पैसे चुराकर कुछ हफ्ते काम चलाया। इसी बीच सुना एक प्रकार का पौधा होता है जिसके डंठल बीड़ी की तरह जलते हैं और फूँके जा सकते हैं। हमनें उन्हें प्राप्त किया और फूँकने लगे।

पर हमें संतोष नहीं हुआ। अपनी पराधीनता हमें अखरने लगी। हमें दुःख इस बात का था कि बड़ों की आज्ञा के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते थे। हम ऊब गये और हमने आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया।

पर आत्महत्या कैसे करें? जहर कौन दे? हमनें सुना कि धतूरे के बीज खाने से मृत्यु होती है। हम जंगल में जाकर बीज ले आये। शाम का समय तय किया। केदारनाथजी के मन्दिर की दीपमाला में घी चढ़ाया, दर्शन किये और एकान्त खोज लिया। पर जहर खाने की हिम्मत न हुई। अगर तुरन्त ही मृत्यु न हुई तो क्या होगा? मरने से लाभ क्या? क्यों न पराधीनता ही सह ली जाये? फिर भी दो-चार बीज खाये। अधिक खाने की हिम्मत ही न पड़ी। दोनों मौत से डरे और यह निश्चय किया कि रामजी के मन्दिर जाकर दर्शन करके शान्त हो जायें और आत्महत्या की बात भूल जायें।

मेरी समझ में आया कि आत्महत्या का विचार करना सरल है, आत्महत्या करना सरल नहीं। इसलिए कोई आत्महत्या करने का धमकी

मोहनदास करमचंद गाँधी चौदह वर्ष की आयु में

देता है, तो मुझपर उसका बहुत कम असर होता है अथवा यह कहना ठीक होगा कि कोई असर होता ही नहीं।

आत्महत्या के इस विचार का परिणाम यह हुआ कि हम दोनों जूठी बीड़ी चुराकर पीने की और नौकर के पैसे चुराकर बीड़ी खरीदने और फूँकने की आदत भूल गये। फिर बड़ेपन में पीने की कभी इच्छा नहीं हुई। मैंने हमेशा यह माना है कि यह आदत जंगली, गन्दी और हानिकारक है। दुनियां में बीड़ी का इतना जबरदस्त शौक क्यों है, इसे मैं कभी समझ नहीं सका हूँ। रेलगाड़ी के जिस डिब्बे में बहुत बीड़ी पी जाती है, वहाँ बैठना मेरे लिए मुश्किल हो जाता है और धुँए से मेरा दम घुटने लगता है।

बीड़ी के ठूँठ चुराने और इसी सिलसिले में नौकर के पैसे चुराने के दोष की तुलना में मुझसे चोरी का दूसरा जो दोष हुआ, उसे मैं अधिक गम्भीर मानता हूँ। बीड़ी के दोष के समय मेरी उम्र बारह-तेरह साल की रही होगी; शायद इससे कम भी हो। दूसरी चोरी के समय मेरी उम्र पन्द्रह साल की रही होगी। यह चोरी मेरे माँसाहारी भाई के सोने के कड़े के टुकड़े की थी। उनपर मामूली सा, लगभग पच्चीस रुपये का कर्ज हो गया था। उसकी अदायगी के बारे में हम दोनों भाई सोच रहे थे। मेरे भाई के हाथ में सोने का ठोस कड़ा था। उसमें से एक तोला सोना काट लेना मुश्किल न था।

कड़ा कटा। कर्ज अदा हुआ। पर मेरे लिए यह बात असह्य हो गयी। मैंने निश्चय किया कि आगे कभी चोरी करूंगा ही नहीं। मुझे लगा कि पिताजी के सम्मुख अपना दोष स्वीकार कर ही लेना चाहिये। पर जीभ न खुली। पिताजी स्वयं मुझे पीटेंगे, इसका डर तो था ही नहीं। मुझे याद नहीं पड़ता कभी हममें से किसी भाई को पीटा हो। पर खुद दुःखी होंगे, शायद सिर फोड़ लें। मैंने सोचा कि यह जोखिम उठाकर भी दोष कबूल कर लेना चाहिये, उसके बिना शुद्धि नहीं होगी।

आखिर मैंने तय किया कि चिट्ठी लिख कर दोष स्वीकार किया जाये और क्षमा माँग ली जाये। मैंने चिट्ठी लिखकर हाथोहाथ दी। चिट्ठी में सारा दोष स्वीकार किया और सजा चाही। आग्रहपूर्वक विनती की कि वे अपने को दुःख में न डालें और मैंने भविष्य में फिर ऐसा अपराध न करने की प्रतिज्ञा की।

मैंने काँपते हाथों चिट्ठी पिताजी के हाथ में दी। मैं उनके तख्त के सामने बैठ गया। उन दिनों वे भगन्दर की बीमारी से पीड़ित थे, इस कारण बिस्तर पर ही पड़े रहते थे। खटिया के बदले लकड़ी का तख्त काम में लाते थे।

उन्होंने चिट्ठी पढ़ी। आँखों से मोती की बूँदे टपकीं। चिट्ठी भीग गयी। उन्होंने क्षण भर के लिये आँखें मूंदी, चिट्ठी फाड़ डाली और स्वयं पढ़ने के लिए उठ बैठे थे, सो वापस लेट गये।

मैं भी रोया। पिताजी का दुःख समझ सका। अगर मैं चित्रकार होता, तो वह चित्र आज भी सम्पूर्णता से खींच सकता। आज भी वह मेरी आँखों के सामने इतना स्पष्ट है।

मोती की बूँदों के उस प्रेमबाण ने मुझे बेध डाला। मैं शुद्ध बना। इस प्रेम को तो अनुभवी ही जान सकता है।

रामबाण वाग्यां रे होय ते जाणे। (राम की भक्ति का बाण जिसे लगा हो वही जान सकता है।)

मेरे लिए यह अहिंसा का पदार्थपाठ था। उस समय तो मैंने इसमें पिता के प्रेम के सिवा और कुछ नहीं देखा, पर आज मैं इसे शुद्ध अहिंसा के नाम से पहचान सकता हूँ। ऐसी अहिंसा के व्यापक रूप धारण कर लेने पर उसके स्पर्श से कौन बच सकता है? ऐसी व्यापक अहिंसा की शक्ति की थाह लेना असम्भव है।

इस प्रकार की शान्त क्षमा पिताजी के स्वभाव के विरुद्ध थी। मैंने सोचा था कि वे क्रोध करेंगे, शायद अपना सिर पीट लेंगे। पर उन्होंने इतनी अपार शान्ति जो धारण की, मेरे विचार से उसका कारण अपराध की सरल स्वीकृति थी। जो मनुष्य अधिकारी के सम्मुख स्वेच्छा से और निष्कपट भाव से अपराध स्वीकार कर लेता है और फिर कभी वैसा अपराध न करने की प्रतिज्ञा करता है, वह शुद्धतम प्रायश्चित्त करता है।

मैं जानता हूँ कि मेरी इस स्वीकृति से पिताजी मेरे विषय में निर्भय बने और उनका महान प्रेम और भी बढ़ गया।

(सत्य के प्रयोग, पांचवां पुनर्मुद्रित संस्करण पृष्ठ २०)

– क्रमशः

'अंधेरे में'

'ओ मेरे आदर्शवादी मन
ओ मेरे सिद्धान्तवादी मन
अब तक क्या किया
जीवन क्या जिया
लिया बहुत-बहुत अधिक
दिया बहुत-बहुत कम
मर गया देश
जीवित बचे तुम।'

– गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की प्रसिद्ध कविता की चन्द पंक्तियाँ

सुविचार

प्रायश्चित्त की आवश्यकता जहां अपनी आन्तरिक अनुमति से पैदा होनी चाहिए, वहां उसके साथ भविष्य के प्रति प्रतिज्ञा का भाव भी होना चाहिए।

(गाँधीजी की सूक्तियाँ, पृष्ठ ६७ से साभार)

– महात्मा गाँधी

संस्मरण.....

अपयश

भारत जैसी सामाजिक विरासत विश्व के किसी भी अन्य देश की नहीं है। हमारे यहाँ हजारों-लाखों वर्षों के प्रयासों के उपरान्त सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक जीवनमूल्यों का सृजन हुआ है। ये मूल्य ही श्रेष्ठ मानव की परिभाषा गढ़ते हैं साथ ही व्यक्ति को जीवन और उससे सम्बन्धित प्रत्येक पहलू के विषय में अवगत कराते हैं। धर्म-अधर्म, उचित-अनुचित एवं यश-अपयश की सीमाओं, परिणामों से भिज्ञ करवाते हैं। यही समस्त विशेषताएँ भारत को महान राष्ट्र की श्रेणी में सम्मिलित करती हैं – और यहाँ के नागरिकों को उनके कर्तव्यबोध से अवगत करवाती हैं –

एक लड़का था। चरित्र उसका बहुत अच्छा था। गाँधीजी के निकट भी था, लेकिन उसके मन में सिगरेट पीने की तीव्र आकांक्षा थी। वह जानता था, कि यह बुरा काम है। बार-बार अपने मन में तर्क करता था, अरे मैं बापू के इतना निकट हूँ, क्या मुझे सिगरेट पीनी चाहिए?

लेकिन उसके मन ने उसका साथ नहीं दिया। वह परेशान हो उठा और अन्त में गाँधीजी के पास पहुँचा। सब कहानी उसने कह सुनाई और बोला, बापूजी, मैं क्या करूँ? बहुत परेशान हूँ। मन को बहुत समझाता हूँ, लेकिन वह मानता नहीं। मैं चाहता हूँ, सिगरेट न पीऊँ, लेकिन वह जिद करता है।

गाँधीजी ने सहज भाव से उत्तर दिया, तो तेरा मन नहीं मानता। अच्छा, तू सिगरेट पी, लेकिन यह कहकर पीना की गाँधीजी ने मुझे इजाजत दी है।

लेकिन क्या उस लड़के ने सिगरेट पी? गाँधीजी उसकी ढाल बन गये थे, फिर भी वह सिगरेट नहीं पी सका। उनका नाम लेकर पीने से उनकी बदनामी जो होती, और यह उसे किसी रूप में स्वीकार्य नहीं था।

– 'गाँधीजी के रोचक संस्मरण' द्वारा डॉ. कृष्णबीर सिंह से साभार

आज की समाज रचना

जैन इरिगेशन सिस्टम के संस्थापक डॉ. भवरलाल जैन एक उच्च कोटि के विद्वान व चिंतक हैं। अपने व्यवसाय तथा अन्य गतिविधियों के दौरान उन्हें विभिन्न सामाजिक एवं सरकारी संगठनों से रूबरू होना पड़ता है तथा तज्जन्य व्यावहारिक विसंगतियों का सामना करना पड़ता है। इन विसंगतियों और उनके संभावित समाधान हेतु वे सतत चिंतन-मनन करते रहते है। अपने इन चिन्तनों को शब्द रूप दिया आपने अपनी मराठी कृति 'आज की समाज रचना' में। इस पुस्तक में आपने अपने इन्हीं सामाजिक एवं व्यावहारिक अनुभवों को पिरोया है। आपका मानना है कि भारत में शोषक और शोषित ऐसे दो वर्ग अंग्रेजों की नीति के कारण अस्तित्व में आये थे, जिनमें असुंतलन आज भी बना हुआ है। इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। शोषक वर्ग ने अपने निजी फायदे के लिये सरकार पर दबाव डालने के लिये अनेक गुट और सत्ता के दलाल पैदा किये। फलत: भ्रष्टाचार का उद्‌भव हुआ जो लगातार बढ़ता जा रहा है। डॉ. भवरलाल जैन की इस रचना में गाँधी की चिंतनधारा का एहसास झलकता है। – **सम्पादक***

जनप्रतिनिधि (राजनेता) और नौकरशाही

जन प्रतिनिधि और नौकरशाही प्रशासन के ये दोनों अंग साथ-साथ होने के पश्चात् भी कदाचित ही समाज में नवीन विचार-प्रवाह और उसकी पद्धति फैलाई हो। समाज का कल्याण करना प्रशासन के इन्हीं दोनों अंगों का कर्तव्य है। इन दोनों अंगों ने सार्वजनिक कल्याण के नाम पर समाज के प्रतिष्ठित, बुद्धिजीवी, राष्ट्रवादी, तटस्थ समाजसेवियों को जो राष्ट्र के निर्माण और उत्थान के लिए काम करना चाहते हैं, बहिष्कृत कर दिया है। धीरे-धीरे समाज का हर वर्ग प्रशासन के अन्तर्गत आ गया। जहाँ तक खेती का प्रश्न है, खेती के लिए पानी और खाद उपलब्ध कराना, बीजों की आपूर्ति कराना आदि उत्तरदायित्व भी सरकार ने अपने ऊपर ले लिया है। सभी को उच्चकोटि की शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए शासकीय शिक्षण संस्थाओं का निर्माण किया गया है। विभागीय शैक्षणिक मंडलों की स्थापना करके निजी शिक्षण संस्थाओं पर नियंत्रण तय किया गया है। जनता के स्वास्थ्य, आवागमन, व्यापार, उद्योग, रोजगार का उत्तरदायित्व सरकार उठायेगी, इस प्रकार का वातावरण निर्माण किया गया है। न्यूनाधिक परिमाण में उपर्युक्त सभी आवश्यकताओं की आपूर्ति करना, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सरकार के कार्य प्रणाली का एक आवश्यक अंग बन गया है। कुछ ठोस कारणों से व्यवसाय व उद्योग निर्माण और उनके नियंत्रण कार्य भी सरकार ने अपने हाथ में ले लिया है। संक्षेप में सरकार ने समाज के प्रत्येक घटक का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया है। समाज अपने हर मामले में सरकार पर निर्भर हो गया है। सारत: सरकार ने सामाजिक जीवन को भी एकध्रुवीय अधिसत्ता के अधीन कर लिया है। इसी प्रकार राजनैतिक क्षेत्र ने भी सामाजिक जीवन के समस्त अंगों को अपनी अधिसत्ता के अधीन कर लिया है। यह सारा खेल कल्याणकारी राज्य के नाम पर खेला गया है।

डॉ. भवरलालजी जैन

उपर्युक्त कारणों और परिस्थितियों में अनेक कष्ट प्रदान करनेवाले समीकरणों का उदय हुआ। जब राजनेताओं पर कार्यों को शीघ्रता पूर्वक सम्पन्न करने का दबाव बढ़ने लगा तो उन्होंने इसमें विलम्ब के लिए नौकरशाही को उत्तरदायी ठहराना प्रारम्भ कर दिया। परिणामस्वरूप दोनों घटकों के मध्य विवाद और विरोध का वातावरण निर्मित होने लगा। राजनेताओं ने अपने निर्वाचन क्षेत्रों और व्यक्तिगत लाभप्रद कार्यों के लिए नौकरशाहों और अधिकारियों पर न्यूनाधिक परिमाण में उचित-अनुचित कार्यों के लिए दबाव डालना शुरू किया। किन्तु अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति करने के लिए धीरे-धीरे दोनों के मध्य सहमति का वातावरण बना और नियमों को ताक पर रख कर, गैरकानूनी कार्यों को कानून के अनुसार करने की युक्ति निकाली जाने लगी। इस प्रकार के कार्यों से अधिकारी वर्ग, कर्मचारी वर्ग और राजनेता सभी प्रसन्न होने लगे। राजनेता ऐसे नौकरशाहों की छोटी-बड़ी त्रुटियों, अनिष्ट वार्ताओं की अनदेखी करने लगे। परिणामत: प्रशासनिक कार्यों में राजनेताओं के स्वार्थप्रद कार्यों की परिव्याप्ति जिस परिमाण से बढ़ती गई, उसी परिमाण में राजनेता नौकरशाहों के अधीन होते गए। राजनेताओं की इस हवस से उनकी मुश्किलें बढ़ने लगीं। अपने विभाग का वैधानिक ज्ञान कम होने के कारण राजनेताओं की निर्भरता अधिकारियों पर बढ़ती गई। इस कारण नौकरशाह निडर और उच्छृंखल हो गए। साथ ही ऐसी स्थिति बन गई की उन्हें एक-दूसरे की सहायता के बिना कार्य सम्पन्न कर सकना जटिल और कठिन हो गया।

पं. जवाहरलाल नेहरू ने सरदार वल्लभभाई पटेल को लिखा था, यदि अधिकारियों को ऐसा आभास हो गया हो कि वे कुछ भी करें फिर भी सरकार का वरदहस्त उनपर है, तो वे प्रजातंत्र को रास न आने वाला व्यवहार करने लगेंगे। अंग्रेजों के समय में अधिकारी जनता को अपना शत्रु मानते थे और विरोधी समझ कर कुचल डालते थे। उन्हीं जैसा बर्ताव करने का दुस्साहस हमारे अधिकारियों में भी पैदा होगा। नेहरूजी के मन की यह आशंका पूर्णत: सत्य सिद्ध हुई और आज ऐसी ही स्थिति लगभग सभी राज्यों में देखने को मिल रही है।

अंग्रेजों ने पहले से ही देश को कंगाल कर डाला था, ऊपर से संसाधनों की भी पर्याप्त कमी थी। दरिद्रता का उन्मूलन एवं अभावों पर नियंत्रण करने हेतु नियोजन प्रणाली, लाइसेंस, कोटा और परमिट राज का लाभ चतुर व्यापारियों, उद्योगपतियों और पूँजीपतियों को मिला।

* 'आजची समाज रचना, तिचे स्वरूप व पुनर्बांधणी' के डॉ. योगेंद्र यादव द्वारा किए गये हिंदी अनुवाद 'आज की समाज रचना' से साभार.

इन वर्गों ने उपलब्ध संसाधनों पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली। शेष शोषित एवं उपेक्षित वर्ग की तुलना में उन्हें लाभ मिला। वह असंतुलन आज भी बना हुआ है। इससे विषमता में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। इस प्रणाली द्वारा सरकार पर दबाव डालने के लिए अनेक गुट एवं सत्ता के दलाल तैयार हो गए। भ्रष्टाचार का उद्भव हुआ और वह चंद्रमा की भाँति उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया।

राजनैतिक स्तर पर राज-काज चलाने के लिए गलाकाट प्रतिस्पर्धा ने जन्म ले लिया। इस प्रतिस्पर्धा में सम्मिलित होनेवाले राजनेताओं को अनावश्यक धन खर्च करना अनिवार्य सा हो गया। इसके लिए राजनेताओं ने व्यापारी, उद्योगपतियों, पूँजीपतियों एवं मुनाफाखोर लोगों से अनावश्यक रूप से धन की वसूली करने लगे। प्रारम्भ में इसका स्वरूप आपसी सहयोग जैसा था। आगे चलकर यह सौदेबाजी के रूप में परिवर्तित हो गया। इस प्रकार समाज में एक अन्य समीकरण का उद्भव हुआ। इसमें राजनेता, धनवान, व्यापारी और उद्योगपति सम्मिलित हैं। इसके साथ-साथ अमीर और अमीर, गरीब और गरीब होता गया। समाज में विद्यमान विषमता की खाई और असंतुलित हो गई। कालांतर में इन्हीं आधारशिलाओं पर, अशांति और असंतोष की नींव पर इमारतें खड़ी होती गईं।

इन दोनों समीकरणों में से एक तीसरे समीकरण का जन्म हुआ। बढ़ती मँहगाई, पश्चिम की भोगवादी संस्कृति का प्रभाव, कम समय में अधिक सम्पत्ति अर्जित करने की प्रवृत्ति, इन राजनेताओं में बढ़ती गई। अधिकारी वर्ग ने समझ लिया कि अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए ये लोग हमारी सहायता के बिना कुछ नहीं कर सकते। अन्य कारणों से पहले से घनिष्ठ बन चुके नौकरशाहों ने राजनेताओं से धड़ल्ले से हाथ मिलाना प्रारम्भ किया। उसमें से कुछ अपवाद थे और हो रहे हैं। नौकरशाह और राजनेता आपसी सामंजस्य स्थापित कर अपनी जेबें भरने लगे। इससे व्यापारी वर्ग और उद्योगपतियों को भी सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग करना आसान हो गया। सारांश में पहले राजनेता और नौकरशाहों को हाथों में अपार शक्ति और अधिकार प्राप्त हो चुके थे। उस समय उनके पास कोई उल्लेखनीय सम्पत्ति नहीं थी। व्यापारी, उद्योगपतियों ने लाइसेंस, कोटा और परमिट जैसे मार्गों से अपार सम्पत्ति अर्जित की। किन्तु उनके पास सत्ता और अधिकारों का अभाव था। अत: दोनों में घनिष्ठता हो चुकी थी। इस प्रकार समाज में इन तीनों का एक नया समीकरण बन गया। भ्रष्टाचारी व्यापारी और उद्योगपति, साधनों की शुचिता का न पालन करने वाले राजनेता और अधिकांशत: निष्क्रिय और भ्रष्ट अधिकारियों की मिलीभगत हो गई। इस समीकरण से प्रशासनिक स्तर पर सहज रूप से लिये जानेवाले निर्णय कई बार बड़े उद्योगपतियों या प्रभावशाली गुटों को ध्यान में रख कर किए जाने लगे।

सारांशत: अर्थतंत्र का राजनीति एवं राजनेताओं पर पड़ने वाला प्रभाव स्पष्ट होने लगा। इस समीकरण की जड़ें कितनी गहराई तक गई हैं, इस बात पर यह निर्भर करता है कि सम्बन्धित प्रदेशों में भ्रष्टाचार कितना और किस स्तर तक फैला है और राज-काज कैसा चल रहा है। समाज की उपेक्षा और शोषण का मार्ग इस प्रकार से और भी प्रशस्त हो गया। इससे आम आदमी का सरकार नामक संस्था पर से विश्वास लगभग समाप्त हो गया।

क्रमश:

...

संस्मरण.....

हाँ, मैं ही गाँधी हूँ

गाँधीजी बेहद निडर थे। निडरता का कारण था उनका सत्यता से जीवन यापन करना। वे आडम्बर या झूठ-फरेब से कोसों दूर थे। मौत को कटु सत्य समझने वाले गाँधी के सामने अंग्रेजी सत्ता भयाक्रान्त रहती थी क्योंकि उन्हें किसी लालच या धमकी से डराया या झुकाया नहीं जा सकता था। प्रस्तुत है ऐसी एक घटना -

चम्पारन में गाँधीजी ने सत्याग्रह की एक शानदार लड़ाई लड़ी थी। अंग्रेज वहाँ के लोगों को बड़ा सताते थे। चम्पारन के लोग नील की खेती करने के कारण निलहे कहलाते थे। उन्हीं की जाँच करने को गाँधीजी वहाँ गये थे। उनके इस काम से जनता जाग उठी। उसका साहस बढ़ गया, लेकिन अँग्रेज बड़े परेशान हुए। वे अब तक मनमानी करते आ रहे थे। कोई उनकी ओर अँगुली उठाने का साहस न करता था। लेकिन गाँधी ने तूफान खड़ा कर दिया था। वे आग-बबूला हो उठे।

इसी समय एक व्यक्ति ने आकर गाँधीजी से कहा, ''यहाँ का एक अंग्रेज बहुत दुष्ट है। वह आपको मार डालना चाहता है। इस काम के लिए उसने हत्यारे भी तैनात कर दिये हैं।''

गाँधीजी ने बात सुन ली। उसके बाद एक दिन, रात के समय अचानक वे उस अंग्रेज की कोठी पर जा पहुँचे। अंग्रेज ने उन्हें देखा तो घबरा गया। उसने पूछा, ''तुम कौन हो?''

''मैं गाँधी हूँ।''

वह अंग्रेज और भी हैरान हो गया। बोला, ''गाँधी?''

''हाँ, मैं गाँधी हूँ।'' गाँधीजी ने उत्तर दिया, ''सुना है तुम मुझे मार डालना चाहते हो। तुमने हत्यारे भी तैनात कर दिये हैं।''

अंग्रेज सन्न रह गया, जैसे सपना देख रहा हो। अपने मरने की बात कोई इतने सहज भाव से कैसे कह सकता है। वह कुछ सोच सके, इससे पहले ही गाँधीजी फिर बोले, ''मैंने किसी से कुछ नहीं कहा। अकेला ही आया हूँ।''

बेचारा अंग्रेज! उसने डर को जीतने वाले ऐसे व्यक्ति कहाँ देखे थे! वह आगे कुछ भी न बोल सका।

अंग्रेज ने गाँधीजी से क्षमायाचना करते हुए आसन ग्रहण करने का आग्रह किया। वह बोला - ''मिस्टर गाँधी! आप मुझे क्षमा करें। वास्तव में आप जैसा अद्भुत व्यक्ति मैंने कभी नहीं देखा। आपने मुझे भयंकर अपराध से बचा लिया।''

- 'गाँधीजी के रोचक संस्मरण' द्वारा डॉ. कृष्णबीर सिंह से साभार

...

त्याग और समर्पण – हिन्दू धर्म का सार

पहले-पहल किलन की आम सभा में गाँधीजी ने 'ईशावास्यमिंद सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्' इस उपनिषद् – मंत्र द्वारा हिन्दू धर्म के मूल विश्वास का सार स्पष्ट किया था। ईशावास्योपनिषद् के इस मंत्र पर आधारित हिंदू धर्म के विषय में प्रस्तुत है महात्मा गाँधी के विचार। – **सम्पादक**

मैं ईशावास्योपनिषद् का एक मंत्र आज आपके सामने रखता हूँ।

ईशावास्यमिंद सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुंजीथा: मा गृध: कस्यस्विद् धनम्। ईशा.१.१

अर्थात् ''इस विश्व में जो कुछ है उस सब में ईश्वर शासक बनकर विराजमान है। इसलिये सर्वस्व का त्याग करके उसे समर्पण कर दो और फिर उस भाग का भोग या उपभोग करो जो तुम्हारे हिस्से में आये। किसी के धन का लोभ हरगिज न करो।''[१]

आपमें से बहुत से लोग ईशावास्योपनिषद् के विषय में जानते होंगे। मैंने वर्षों पहले इसे अनुवाद और टीका के साथ पढ़ा था। येरवड़ा जेल में मैंने उसे कण्ठस्थ किया। परन्तु उस समय यह मुझे उतना प्रभावित नहीं किया, जैसा कि पिछले चंद महीनों में किया है और अब मैं इस अंतिम निर्णय पर पहुंचा हूँ कि अगर सारे उपनिषद् और अन्य धर्मग्रंथ अचानक जलकर राख भी हो जांय और हिन्दुओं की स्मृति में केवल ईशावास्योपनिषद् का यह पहला मंत्र ही रह जाय, तो भी हिन्दू धर्म सदा जीवित रहेगा।

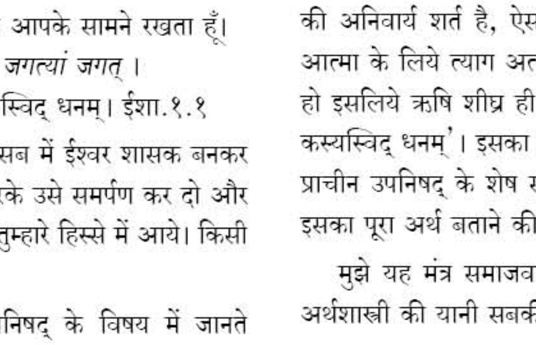

महात्मा गाँधी चिन्तन-मुद्रा में

इस मंत्र के चार भाग हैं। पहला भाग है: '*ईशावास्यमिंद सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्*'[२]। इस मंत्र में ऋषि ने भगवान के लिये 'ईश' के सिवा और किसी विशेषण का उपयोग नहीं किया है और उसने किसी को भी उसके शासन के बाहर नहीं रखा है। वह कहता है कि हम जो कुछ भी देखते हैं, सब ईश्वर से व्याप्त है। दूसरे और तीसरे भाग को मैं साथ ले लेता हूँ: तेन त्यक्तेन भुंजीथा:। इनको मैं दो हिस्सों में बांटकर इस प्रकार अनुवाद करता हूँ: त्याग करो और भोगो। एक और अनुवाद है जिसका वही अर्थ है: वह तुम्हें जो कुछ देता है उसे भोगो। इसका त्याग करने का वह हमें इसलिये कहता है कि हम इतने नगण्य परमाणु हैं कि हमें सम्पत्ति का कुछ भी खयाल हो तो हास्यास्पद दिखाई देगा और फिर वह उसे कहता है कि त्याग का पुरस्कार है – 'भुंजीथा:' अर्थात् त्याग के बाद तुम्हें जो कुछ चाहिये उसका भोग तुम करो। परन्तु अनुवाद के 'भोग' शब्द का अर्थ उपयोग करना, 'खाना' आदि भी किया जा सकता है। इसलिये इसका अभिप्राय यह है कि तुम अपने विकास के लिये जितना जरूरी है उससे अधिक नहीं ले सकते। इस तरह इस भोग अथवा उपयोग के साथ दो शर्ते लगी हुई हैं। एक तो त्याग वृत्ति रखकर अथवा भागवतकार की भाषा में 'कृष्णार्पणमस्तु सर्वम्' की भावना से ही भोग करना चाहिये। भागवत धर्म के अनुयायी को रोज सुबह अपने मन, वचन और कर्म कृष्ण को अर्पण करने पड़ते हैं। यह त्याग अथवा समर्पण का कार्य पूरा किये बिना उसे किसी वस्तु को छूने या एक प्याला पानी भी पीने का अधिकार नहीं होता। त्याग और समर्पण का कर्म करने के बाद उस कर्म के फलस्वरूप आवश्यकता के अनुसार नित्य के लिये अन्न, वस्त्र और आश्रय पाने का हक मिलता है। इसलिये चाहे जैसे समझिये, भोग अथवा उपयोग त्याग का पुरस्कार है, ऐसा समझिये या त्याग भोग की अनिवार्य शर्त है, ऐसा समझिये – हमारे जीवन के लिये, हमारी आत्मा के लिये त्याग अत्यावश्यक है। मंत्र में दी गई शर्त मानो पूरी न हो इसलिये ऋषि शीघ्र ही यह कहकर उसे पूरा करता है कि 'मा गृध: कस्यस्विद् धनम्'। इसका अर्थ है: किसी के धन का लोभ न करो। इस प्राचीन उपनिषद् के शेष सब मंत्र इस पहले मंत्र की टीका जैसे हैं; वे इसका पूरा अर्थ बताने की कोशिश करते हैं।

मुझे यह मंत्र समाजवादी और साम्यवादी की, दार्शनिक की और अर्थशास्त्री की यानी सबकी भूख शान्त करनेवाला मालूम होता है और अगर यह सच है – जैसा कि मैं मानता हूं – तो आपको हिन्दू धर्म में कोई ऐसी चीज लेने की जरूरत नहीं जो इस मंत्र के अर्थ के विरुद्ध हो या उससे मेल नहीं खाती हो। एक साधारण आदमी इससे ज्यादा और क्या सीखना चाहता है कि एक अद्वितीय ईश्वर, भूतमात्र का स्रष्टा और स्वामी सम्पूर्ण विश्व के अणु-अणु में व्याप्त है। इस मंत्र के दूसरे तीन भाग पहले भाग से ही सीधे फलित होते हैं। अगर आप मानते हैं कि ईश्वर ने जो चीजें बनाई हैं, उन सबमें वह मौजूद है तो आप को मानना ही चाहिये कि जो चीज उसने नहीं दी है उसे आप नहीं भोग सकते। यह देखते हुये कि वह अपनी असंख्य संतानों का स्रष्टा है, यह निष्कर्ष निकलता है कि आप किसी की सम्पत्ति का लोभ नहीं कर सकते। यदि आपका यह विचार है कि आप उसके पैदा किये हुये असंख्य प्राणियों में से एक हों, तो आपको चाहिये कि सब कुछ त्यागकर उसके चरणों में रख दें। इसका अर्थ यह है कि सर्वस्व त्याग का कार्य निरा शारीरिक त्याग नहीं है आपितु एक दूसरे या नये जन्म का द्योतक है। यह सोच-समझकर किया हुआ कर्म है, अज्ञानवश किया हुआ कर्म नहीं है। इसलिये वह पुनर्जन्म है। चूंकि जिसका शरीर है उसे अपने लिये खाने, पीने और पहनने को चाहिये, इसलिये उसे जो भी चाहिये वह स्वभावत: प्रभु से मांगना चाहिये और उसे उस त्याग के पुरस्कार के रूप में मिल जाता है। इतना ही नहीं, यह मन्त्र इस विशाल विचार के साथ पूरा होता है: किसी के धन का लोभ न करो। ज्यों ही आप इन उपदेशों पर चलने लगते हैं, आप संसार के सयाने नागरिक बन जाते हैं और सब प्राणियों के साथ शान्तिपूर्वक रहने लगते हैं। इससे इस लोक और परलोक की हमारी सर्वोच्च आकांक्षायें पूरी हो जाती हैं।

ईशावास्योपनिषद् का उक्त मंत्र याद रखिये और दूसरे सब शास्त्रों को भूल जाइये। अवश्य ही आप धर्मग्रंथों के महासागर में डूबकर अपना दम

घोंट सकते हैं। अगर पंडित लोग नम्र और बुद्धिमान हों तो इनके लिये ये ग्रंथ अच्छे हैं, परन्तु साधारण आदमी को भव-सागर के पार उतारने के लिये इस मंत्र के सिवा और किसी चीज की जरूरत नहीं।

किंतु मेरा आपसे यह कहना है कि संसार के किसी भी भाग में पाया जानेवाला सारा दर्शनशास्त्र या धर्म इस मंत्र में समाया हुआ है।

अब मैं इस मंत्र को वर्तमान परिस्थिति पर लागू करना चाहता हूँ। यदि विश्व में जो कुछ है वह सब ईश्वर द्वारा व्याप्त है अर्थात् ब्राह्मण और भंगी, पंडित और चांडाल, कोई भी जाति हो - यदि सभी में भगवान विराजमान है तो इस मंत्र के अनुसार न कोई ऊंचा है और न कोई नीचा है। सभी बिलकुल बराबर हैं, क्योंकि सब उसी एक स्रष्टा की संतान हैं।

मैं चाहूंगा कि जो मंत्र मैंने अभी कहा है वह हम सब स्त्री, पुरुष और बच्चों के हृदयों पर अंकित हो जाय और जैसा कि मैं मानता हूँ, यदि इसमें हिन्दू धर्म का सार माना जाता है तो वह प्रत्येक मंदिर के द्वार पर लिख दिया जाना चाहिये।[३]

इस ऋषि को इस मंत्र के दर्शन हुये, उसे इस भव्य कथन से संतोष नहीं हुआ कि ईश्वर सर्वव्यापी है। परन्तु उसने आगे बढ़कर यह भी कहा: चूंकि ईश्वर प्रत्येक वस्तु में व्याप्त है, इसलिये कोई चीज आपकी नहीं है, आपका अपना शरीर भी आपका नहीं है। आपके पास जो कुछ है उस सबका निर्विवाद स्वामी ईश्वर है और इसलिये जब कोई व्यक्ति जो अपने आपको हिन्दू कहता है, द्विजत्व की या जैसा ईसाई लोग कहते हैं नवजन्म की, प्रक्रिया से गुजरता है, तब उसे उन सब वस्तुओं का जिन्हें वह अज्ञानवश अपनी सम्पत्ति कहता रहा है, समर्पण करना पड़ता है। जब वह समर्पण अथवा त्याग का यह कार्य कर लेता है, तब उससे कहा जाता है कि भोजन, वस्त्र अथवा निवास स्थान के लिये उसे जो कुछ भी चाहिये उसकी चिन्ता अब ईश्वर करेगा। यह उसके त्याग का पुरस्कार है। इसलिये जीवन की आवश्यकताओं के उपभोग अथवा उपयोग की शर्त उनका समर्पण या त्याग है और यह समर्पण या त्याग हमें प्रतिदिन करना पड़ता है, ताकि ऐसा न हो कि हम इस व्यस्त जगत् में जीवन के इस केन्द्रीय तथ्य को भूल जायें। इस मंत्र में सबसे बड़ी बात उसने यह कही है कि किसी के धन का लोभ न करो। मेरा आपसे यह कहना है कि इस स्वल्प से मंत्र में जो सत्य समाया हुआ है उससे प्रत्येक मानव प्राणी की इहलोक तथा परलोक की सर्वोच्च आकांक्षायें पूरी हो सकती हैं।

मुझे संसार के धर्मग्रंथों की अपनी खोज में कोई ऐसी चीज नहीं मिली है जो इस मंत्र में जोड़ी जाय। मैंने धर्मशास्त्रों का जितना अध्ययन किया है - मैं स्वीकार करता हूँ कि वह बहुत थोड़ा है - उस सबका सिंहावलोकन करते हुये मुझे लगता है कि तमाम धर्मग्रन्थों में जो भी अच्छी चीज है वह इस मंत्र में मिल जाती है। विश्वबन्धुत्व की - न सिर्फ तमाम मानव प्राणियों के बन्धुत्व की बल्कि समस्त प्राणियों के बन्धुत्व की बात लीजिये; वह भी मंत्र में मौजूद है। प्रभु में या स्वामी में - आप उसे जो भी नाम देना चाहें दें - अटल श्रद्धा की बात लीजिये, वह भी उस मंत्र में मिलती है। ईश्वर के प्रति सर्वार्पण भाव को लें और इस विश्वास को लें कि वह मेरी सब जरूरतें पूरी करेगा, तो भी मैं कहूंगा की मुझे वह कल्पना उस मंत्र में मिल जाती है। चूंकि वह मेरी और आप सबकी रग-रग में समाया हुआ है। इसलिये मुझे इससे पृथ्वी के तमाम प्राणियों की समानता का सिद्धान्त मिलता है। इससे सब तत्त्वान्वेषी साम्यवादियों की आकांक्षायें पूरी होनी चाहिये। यह मंत्र मुझे बताता है कि जो भी चीज ईश्वर की है उसे मैं अपनी नहीं समझ सकता। और यदि मैं चाहता हूँ कि मेरा जीवन और उन सबका जीवन, जो इस मंत्र में विश्वास रखते हैं, सम्पूर्ण समर्पण का जीवन हो, तो यह परिणाम निकलता है कि वह जीवन हमारे भाइयों की सतत सेवा का जीवन होना चाहिये।

मैं कहता हूँ, मेरी यह श्रद्धा है और जो अपने को हिन्दू कहते हैं उन सबकी यही श्रद्धा होनी चाहिये। मैं अपने ईसाई और मुसलमान भाइयों से यह कहने का साहस करता हूँ कि अगर वे अपने धर्मशास्त्रों को ढूंढेंगे तो उन्हें उनमें इससे अधिक कुछ नहीं मिलेगा।

मैं आपसे यह बात छुपाना नहीं चाहता हूं कि हिन्दू धर्म के नाम पर जो अनेक अंधविश्वास प्रचलित हैं उनसे मैं बेखबर नहीं हूँ। मैं जानता हूँ और मुझे इस बात का बड़ा दुःख है कि हिन्दू धर्म की ओट में कितने ही अंधविश्वास चल रहे हैं। मुझे यह कटु सत्य कहने में कोई संकोच नहीं है। मुझे अछूतपन को इन अंधविश्वासों में सबसे बड़ा बताने में आगा-पीछा नहीं हुआ है। परन्तु इन सबके होते हुये भी मैं हिन्दू बना हुआ हूँ, क्योंकि मैं नहीं मानता कि ये अंधविश्वास हिन्दू धर्म के अंग हैं। हिन्दू धर्म में शास्त्रों के जो अर्थ लगाने के नियम बताये गये हैं वे ही मुझे सिखाते हैं कि इस सत्य का मैंने आपके सामने प्रतिपादन किया है और जो इस मंत्र में निहित है, उससे जो भी वस्तु असंगत हो उसे यह समझकर तुरन्त अस्वीकार कर देना चाहिये की उसका हिन्दू धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता।[४]

गीताधर्म का अनुयायी अपने को चीजों के बिना भी अपना काम सुख से चला लेने की तालीम देता है। गीता की भाषा में इसे समता कहा गया है। क्योंकि गीता का सुख, दुःख का विरोधी नहीं है। वह उस स्थिति से कहीं ज्यादा ऊँची स्थिति है। गीता के भक्त को न सुख होता है, न दुःख और जब हम इस स्थिति में पहुँच जाते हैं, तब दुःख-सुख, हार-जीत, प्राप्ति-अप्राप्ति कुछ नहीं रह जाते।[५]

हमें यह कला सीखनी चाहिये कि मृत्यु किसी की भी और कभी भी क्यों न हो, उस पर हम हरगिज शोक न करें। मेरे ख्याल में ऐसा तभी होगा, जब हम सचमुच अपनी मृत्यु के प्रति उदासीन होना सीखेंगे; और यह उदासीनता तब आयेगी, जब हमें हर क्षण यह भान रहेगा की हमें जो काम सौंपा गया है उसे हम कर रहे हैं।[६]

संदर्भ:

१. हरिजन, ३०-१-३७. पृ. ४०५
२. ईशावास्योपनिषद् १.१
३. हरिजन, ३०-१-३७, पृ. ४-०७-०८
४. वही, ३०-१-३७, पृ. ४१०
५. बापू के पत्र मीरा के नाम पृ. २५९; १९५१
६. वही, पृ. ३०९; १९५१

सुविचार

त्याग अपने कुटुंब और परिजन-पुरजन के लिए सभी करते हैं, पर जो सबके लिए करे वही प्रशंसनीय है।

(गाँधीजी की सूक्तियाँ, पृष्ठ ५२ से साभार)

- महात्मा गाँधी

फाउण्डेशन की गतिविधियाँ

महात्मा गाँधी जयन्ती के उपलक्ष्य में चरखा जयन्ती का भव्य आयोजन सम्पन्न

महात्मा गाँधी के विचारों के प्रचार-प्रसार हेतु गाँधी फाउण्डेशन समय-समय पर विविध कार्यक्रम आयोजित करता रहता है। इसी क्रम में २ अक्टूबर २०१३, को एक अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु यू.एस.ए. से शांति और अहिंसा के गहन अभ्यासी प्रो. मायकल नॅग्लर को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। 'गाँधी व मानवीय आपत्ति' विषय पर सम्मेलन में हुए व्याख्यानों और इस शृंखला में आयोजित अन्य कार्यक्रमों को दर्शाती रिपोर्ट।

अन्तर्राष्ट्रीय व्याख्यानमाला में उपस्थित विशिष्टजन

'गाँधी और मानवीय आपत्ति' विषय पर अपना सारगर्भित व्याख्यान देते हुए प्रो. मायकल नॅग्लर ने कहा कि आज धर्म, जाति, पंथ और देश के नाम पर समूची मानवता को विभाजित करने का कुचक्र अलगाववादी ताकतें कर रही हैं। इससे इंसान-इंसान के बीच अन्तर बढ़ रहा है। इस क्षति की भरपाई तभी हो पायेगी जब हम एक दूसरे के प्रति विश्वास और आदर की भावना का विकास करेंगे। प्रो. डॉ. नॅग्लर ने कहा कि आज की आवश्यकता है कि हम आपस में सहयोग की भावना रखें। प्रत्येक हृदय में यदि सहयोग की भावना और जागरुकता जागृत हुई तो मानवीय आपत्तियों को दूर होने में समय नहीं लगेगा। शांति का मार्ग तभी प्रशस्त होगा जब हिंसा का जवाब अहिंसा से दिया जायेगा। हम एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी नहीं हैं अपितु सबकी प्रगति के लिये हैं, ऐसा विश्वास मन में लाना आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे की तरफ शासक भाव से न देखकर हमें यह सोचना चाहिये कि हम आइने में अपनी प्रतिकृति देख रहे हैं, और तब हमें हमारी अपनी कमियां दूर करने में समय नहीं लगेगा। अपनी अन्तरात्मा की आवाज जब तक हम नहीं सुनेंगे तब तक प्रगति का कोई अर्थ नहीं है। गाँधीजी ने अहिंसा की शक्ति को पहचाना और उस पर आचरण किया और उनके इसी मन्त्र ने ब्रिटिश सामाज्य की चूलें हिलाकर रख दी।

इस व्याख्यानमाला में फाउण्डेशन के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी, सर्वश्री भवरलाल जैन, दलूभाऊ जैन, मेल डंकन तथा कर्नल पी. विठ्ठल आदि उपस्थित थे।

महात्मा गाँधी: त्याग और परिश्रम की प्रतिमूर्ति

गाँधी जयन्ती के अवसर पर बोलते हुए डॉ. भवरलालजी जैन ने कहा कि महात्मा गाँधी में ऐसी कौन सी शक्ति छुपी थी जिससे वे सर्वसामान्य को जीत सके, यह प्रश्न कई बार मेरे मन में आया। वह कोई राजा नहीं थे, प्रधानमन्त्री नहीं थे, राष्ट्रपति नहीं थे और न ही कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष थे। सत्ता का एक भी पद उनके पास नहीं था। फिर ऐसी कौन सी शक्ति थी? दूसरों की तरह मेरे मन में भी यह कुतूहल था। समाधान के रूप में मैंने पाया कि उनकी अहिंसा के विचारों पर असीम श्रद्धा थी और अहिंसा ही उनकी सबसे बड़ी ताकत थी। गाँधीजी

व्याख्यान देते हुए डॉ. भवरलालजी जैन

परिश्रम और त्याग के मूर्तिमन्त रूप थे। अपने जैसे साधारण लोगों में से आकर उन्होंने एक इतिहास की रचना की। जो उनके विचार में आया उसे उन्होंने क्रियान्वित किया। अपने जीवन के छ: महत्त्वपूर्ण वर्ष उन्होंने अलग-अलग सत्याग्रहों को दिया। सत्याग्रह और विभिन्न आन्दोलनों के लिये उन्होंने अपने जीवन के २३३८ दिन जेल में बिताये। दुनियाँ के ३० देशों में, भारत के २० राज्यों एवं २००० गाव-देहातों में जाकर उन्होंने अहिंसा का प्रचार-प्रसार एवं संवाद कार्य किया। तमिलनाडु के अपने २० बार के दौरे में गाँधीजी ने ५१८ गांवों का स्पर्श किया। २९ बार में कुल १५०३ दिनों का अनशन किया। २९९४ स्थानों पर उन्होंने अपने भाषण दिये और १,३८,७०० लोगों से पत्र व्यवहार किया। भारत में १९२० में 'असहयोग आन्दोलन', १९३० में 'दांडी यात्रा' तथा 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' एवं १९४२ में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' किया। इन सभी आन्दोलनों के माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी। अपने जीवन के इस कार्यकाल में उन्होंने हिंसात्मक विचारों को पास तक नहीं आने दिया। उनकी शक्ति त्याग में थी। उनकी इसी शक्ति के कारण इतनी अवधि बीत जाने के बाद आज भी गाँधी के विचार उतने ही प्रासंगिक हैं।

अहिंसा की ताकत की अनुभूति के लिये भयमुक्त होना जरूरी

सम्मेलन में बोलते हुए न्यायमूर्ति श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी ने कहा कि पिछला शतक देश के लिये हिंसामय शतक था। इसी शतक में हिरोशिमा और नागासाकी जैसे शहरों पर बमबारी की गयी और अनायास विश्व को युद्ध के आगोश में धकेला गया। इससे भी ज्यादा भौतिक सुख

साधनों की उपलब्धता के लिये निसर्ग या प्राकृतिक साधनों का दोहन कर पर्यावरण को प्रदूषित किया गया। यह इतिहास पुनः न दोहराया जाय, यह सभी को अपने जेहन में रखना चाहिये। गाँधीजी की अहिंसा में भारी से भारी विध्वंस को रोकने की ताकत थी। इस अहिंसा की ताकत को भयमुक्त हुए बिना नहीं समझा जा सकता है। श्री धर्माधिकारीजी ने कहा कि 'जो बह गयी वह गंगा, जो बच गया वह तीर्थ' है। यह तीर्थ गाँधीजी का तीर्थ है जहां गाँधी विचार सतत प्रवाहशील हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बी.आर. सुब्रमण्यम्, प्रास्ताविक प्रो. एम. पी. मथाई तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. बी. कृष्णकुमार ने किया।

पोस्टकार्ड शृंखला का प्रकाशन

पोस्टकार्ड श्रृंखला का लोकार्पण करते हुए विशिष्टजन

गाँधी संग्रहालय में दुनियाँ के ११९ देशों के पोस्टकार्ड टिकटों का संग्रह किया गया है। इस संग्रह में गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की भी सहभागिता सुनिश्चित करने के लिये प्रसिद्ध चित्रकार श्री वासुदेव कामत के द्वारा गाँधीजी के जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रसंगों को दर्शाने वाले कुल छः पोस्टकार्डों का समावेश किया गया। इन पोस्टकार्डों में गाँधीजी के बचपन, अफ्रीका में बैरिस्टर के रूप में उनकी जिम्मेदारी, नमक सत्याग्रह तथा सूतकताई आदि विविध प्रसंगों को दर्शाया गया है। इन छः पोस्टकार्डों के संग्रह की कीमत १०० रुपये रखी गयी है जिन्हें ६ रुपये का टिकट लगाकर कहीं भी भेजा जा सकता है। यह पोस्टकार्ड गाँधी तीर्थ पर विक्रय हेतु उपलब्ध है। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित इन पोस्टकार्डों का लोकार्पण सर्वश्री कर्नल पी. विट्ठल, दलुभाऊ जैन, भवरलालजी जैन, न्या. चन्द्रशेखर धर्माधिकारी, मायकल नॅग्लर, मेल डंकन एवं एम. पी. मथाई के कर-कमलों द्वारा किया गया।

अहिंसा रैली का आयोजन

नेहरू चौक जलगांव से गाँधी उद्यान, जलगांव तक आयोजित इस रैली का उद्घाटन प्रसिद्ध गाँधीवादी न्यायमूर्ति श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी ने किया। इस रैली में लगभग २००० स्कूली बच्चों ने भाग लिया। इस रैली में संस्था के संस्थापक डॉ. भवरलाल जैन के अतिरिक्त जिन

हरी झंडी दिखाकर अहिंसा रैली का शुभारंभ करते हुए श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी

महानुभावों ने सहभागिता की उनमें मुख्य थे जलगांव के महापौर श्रीमती राखी सोनवणे, जिला परिषद् के अध्यक्ष श्री ज्ञानेश्वर राजूरकर, पुलिस अधीक्षक श्री एस. जयकुमार, एन. सी. सी. के मेजर श्री सुरेश कुमार, ज्येष्ठ समाजसेवी श्री दलूभाऊ जैन, श्री मेल डंकन तथा प्रो. मायकल नॅग्लर आदि। रैली का समापन गाँधी उद्यान में हुआ। समापन समारोह में मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुए न्यायमूर्ति श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी ने अपने व्याख्यान में कहा कि, 'आज महात्मा गाँधी के अहिंसा और तत्त्वज्ञान की सम्पूर्ण विश्व को महती आवश्यकता है। श्रम को जब तक प्रतिष्ठा नहीं मिलती, देश का उद्धार और सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं

संगोष्ठी में विचार व्यक्त करते हुए श्री मेल डंकन

है। चरखा परिश्रम का प्रतीक है। महात्मा गाँधी ने स्वदेशी और श्रम की प्रतिष्ठा को सम्मान देने के लिये खादी को प्रधानता दी। इस देश का यदि प्रत्येक निवासी साल में दो ड्रेस खादी का पहने तो कम से कम दो करोड़ लोगों को रोजगार का अवसर प्राप्त हो सकेगा। महात्मा गाँधी के साथ आज भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की भी जयन्ती है। हमें इन दोनों महापुरुषों द्वारा बताये गये रास्तों पर संकल्प के साथ आगे बढ़ना चाहिये।

हिंसा को रोकने की ताकत अहिंसा में

कार्यक्रम में नॉन-वायलेंस और पीस फोर्स के संचालक श्री मेल डंकन ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि युद्ध-हिंसा में लगभग ९० प्रतिशत सैनिक जख्मी होते हैं। ७५ प्रतिशत नागरिक जख्मी होते हैं जिनमें अधिकांशत: महिला और बच्चे होते हैं। इस प्रकार की हिंसा का जवाब अहिंसा से देना कितना प्रभावी रहा है यह दुनियाँ के संज्ञान में आ चुका है। गाँधीजी के सत्य-अहिंसा के विचारों से प्रभावित होकर लोगों ने २००२ में अहिंसा सेना की स्थापना की। यह सेना आज अफ्रीका के सूडान जैसे देश से लेकर फिलीपिंस, श्रीलंका तथा सीरिया जैसे देशों में प्रभावी तरह से अहिंसा के माध्यम से शांति निर्माण का कार्य कर रही है। इस अवसर पर जलगांव के जिलाधिकारी ज्ञानेश्वर राजूरकर की उपस्थिति में लोगों को 'अहिंसा शपथ' दिलाई गयी।

चित्रकला स्पर्धा

चित्रकला स्पर्धा में भाग लेते हुए छात्र और छात्रायें

गाँधी जयन्ती के निमित्त फाउण्डेशन द्वारा एक चित्रकला स्पर्धा का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन प्रो. नॅग्लर ने गाँधीजी का रेखाचित्र बनाकर किया। इस स्पर्धा में शहर के विभिन्न स्कूलों से लगभग १०५४ विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसमें प्रतिभागियों के कुल तीन वर्ग बनाये गये थे। प्रथम वर्ग ४थी-७वीं स्टैंडर्ड के ५५५ विद्यार्थियों का था जिन्हें चित्रकला हेतु 'खेती, पशु-पक्षी और आकाश विषय दिया गया था। इसीप्रकार ८ वीं-१२ वीं स्टैंडर्ड के ४७२ विद्यार्थियों तक के दूसरे वर्ग को 'मेरा देखा हुआ गांव' विषय दिया गया तथा विद्यार्थियों के अतिरिक्त एक सामान्य वर्ग के प्रतिभागी जिनकी संख्या १० थी को 'गाँधी जीवन' पर रेखाचित्र बनाने को दिया गया। इस स्पर्धा में ६ मूक-बधिर छात्रों की उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय रही।

♦♦♦

एमपीस लॅब– १३ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न

एमपीस-२०१३ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए श्री दलूभाऊ जैन

महात्मा गाँधी के विचारों के अनुरूप नेतृत्व के माध्यम से कृषि व्यवसाय और शाश्वत स्थिरता के क्षेत्र में शान्ति के सशक्तीकरण के लिये विचारों के आदान-प्रदान हेतु एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन जैन हिल्स पर किया गया। यह सम्मेलन गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, यूएसआर नेट, ॲरिझोना स्टेट यूनिवर्सिटी, नेब्रास्का यूनिवर्सिटी तथा अफ्रीकन यूनियन आदि शैक्षणिक संस्थाओं के सहयोग से किया गया। इस सम्मेलन में २० देशों के लगभग ५० प्रतिनिधियों ने अपने विचारों का आदान-प्रदान किया।

कठोर परिश्रम से ही शाश्वत विकास सम्भव

कृषि व्यवसाय और शाश्वत विकास से गरीबी उन्मूलन तथा तद्नुसार विकास को जोड़ने वाले शान्ति के सशक्तीकरण पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए डॉ. भवरलालजी जैन ने कहा कि आज दिनोंदिन श्रम की प्रतिष्ठा और कठोर श्रम करने वालों की कमी होती जा रही है। शाश्वत विकास में कृषि क्षेत्र का नि:संन्देह महत्त्व है और कृषि में कठोर परिश्रम की आवश्यकता होती है। आज समाज में झटपट पैसा एकत्रित करने की प्रवृत्ति का बोलबाला है। मात्र धन से शाश्वत विकास का मार्ग प्रशस्त नहीं होता। शाश्वत विकास का मार्ग कृषि उद्योग और उसपर आधारित व्यवसाय है। इस अवसर पर गुजरात विद्यापीठ के कुलपति डॉ. सुदर्शन आय्यंगर, ॲरिझोना स्टेट यूनिवर्सिटी के प्रो. मेरेक वोसिन्सकी, टाटा सोश्यल इन्स्टीट्यूट के प्रो. विमला

प्रतिभागी एवं आयोजक – एमपीस लॅब्स, २०१३

नाडकर्णी, डॉ. रोनाल्ड मान, श्री पापे साम्ब, डॉ. रिमझिम अग्रवाल, सेवादास श्री दलूभाऊ जैन, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के डीन प्रो. एम. पी. मथाई आदि महानुभाव उपस्थित थे।

ग्रामीण विकास के लिये कृषि क्षेत्र को प्राथमिकता अनिवार्य

सम्मेलन में मार्गदर्शन करते हुए डॉ. सुदर्शन आय्यंगर

सम्मेलन का मार्गदर्शन करते हुए गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के कुलपति डॉ. सुदर्शन आय्यंगर ने कहा कि जिस अनुपात में विश्व की जनसंख्या बढ़ती है उसी अनुपात में प्राथमिकताओं का निर्माण होता रहता है। भारत में सन् १८०४ में औद्योगीकरण की शुरुआत हुई। तब से रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध कराये गये। औद्योगीकरण के २०० वर्षों के इतिहास को शाश्वत मन्त्र देनेवाले, विश्व के अन्नधान्य की आवश्यकता की पूर्ति करने वाले कृषि क्षेत्र का इतिहास दस हजार वर्ष पुराना है, यह हमें विस्मृत नहीं करना चाहिये।

ग्रामीण विभाग, रोजगार निर्माण, अन्नसुरक्षा, कृषि क्षेत्र का मानव से सम्बन्ध तथा समाज के प्रत्येक घटक की विकास के प्रवाह में सहभागिता पर बल देने की आवश्यकता पर टाटा सोश्यल इन्स्टीट्यूट के प्रो. विमला नाडकर्णी ने प्रकाश डाला। सम्मेलन के दूसरे सत्र में समन्वयक प्रो. मेरेक वोसिन्सकी, डॉ. रोनॉल्ड मान, डॉ. बार्बरा क्लिमेक ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। अफ्रीका के युवा विद्वान श्री पापे साम्ब ने कहा कि समुदाय विकास में सन्नद्ध सेवाभावी संस्थाएं केवल अनुदान पर आश्रित नहीं रह सकतीं बल्कि उन्हें व्यवसायाभिमुख विविध उपक्रमों से जोड़ा जाना चाहिये, तभी वे भविष्य में टिक सकती हैं। रोजगार पैदा करने वाले उपक्रमों की आज महती आवश्यकता है। इस आवश्यकता को मद्देनजर रखते हुए समुदाय विकास से रोजगार उत्पन्न करनेवाले गावों में विभिन्न व्यवसायों का प्रशिक्षण, किसानों की कर्जमुक्ति में मदद, तथा उत्पादन और विक्रय में कुशलता के लिये श्री पापे साम्ब ने सेवाभावी संस्थाओं का आह्वान किया।

केनियाँ में ड्रिप सिस्टम से सिंचाई क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन

केनियाँ (अफ्रीका) में किबुइझी नदी पर जैन इरिगेशन के माध्यम से साकार रूप लेती ड्रिप सिस्टम सिंचन-प्रणाली के यशस्वी प्रयोग और उससे आये परिवर्तनों की सिलसिलेवार सूचना डॉ. पी. सोमण ने दी। उन्होंने बताया कि इस नदी से पहले केवल ५० एकड़ खेतों की सिंचाई हो पाती थी किन्तु जैन इरिगेशन की ड्रिप सिस्टम की अत्याधुनिक प्रणाली के प्रयोग से आज ८०० एकड़ खेतों की सिंचाई हो पा रही है। इस ड्रिप सिस्टम के प्रयोग तथा कृषि-प्रशिक्षण से केनियाँ के किसानों की जीवनदशा में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है।

संवाद के अभाव से संघर्षजन्य परिस्थिति

इस अवसर पर बोलते हुए टाटा सोश्यल इन्स्टीट्यूट से पधारीं प्रो. विमला नाडकर्णी ने कहा कि व्यक्ति और व्यक्ति के बीच पूर्ण संवाद के अभाव ने आज संघर्षजन्य परिस्थिति पैदा कर दी है। महात्मा गाँधी के आदर्श अहिंसा के प्रयोग से संघर्ष को शान्ति में परिवर्तित किया जा सकता है। गरीब, श्रीमन्त, स्त्री-पुरुष, शहर, राज्य, देश के मध्य अनेक कारणों से संघर्ष की भूमिका का निर्माण होता है। इस संघर्ष को मिटाने के लिये संघर्ष के सकारात्मक कारणों को समझकर सुसंवाद के जरिये इन्हें शांति में परिवर्तित करने में देर नहीं लगती।

कृषि उत्पादन वृद्धि के लिये उच्च तंत्रज्ञान आवश्यक

सम्मेलन में अपना विचार रखते हुए श्री. एस. पी. जाधव

डॉ. जाधव ने अल्प जमीन धारक कृषि और कृषि समूह के सम्बन्ध में अपना मार्गदर्शन दिया। कृषि उत्पादन वृद्धि का लक्ष्य रखते हुऐ भी पानी की बचत हेतु डिमांड इरिगेशन, लिफ्ट इरिगेशन, ड्रिप सिस्टम आदि अनेक प्रारूपों पर उन्होंने सविस्तार तथा सोदाहरण प्रकाश डाला।

सामाजिक विकास हेतु प्रभावी प्रस्ताव आवश्यक

सर्वांगीण सामाजिक विकास में देश की प्रमुख स्वयंसेवी संगठनों का क्या रोल हो सकता है, कैसे आर्थिक सहायता प्राप्त की जा सकती है, शासन के लिए प्रभावी प्रस्ताव कैसे तैयार किया जायें जिससे अधिक

सम्मेलन में मार्गदर्शन करते हुए डॉ. रोनॉल्ड मान

अनुदान प्राप्त हो सके आदि विषयों पर डॉ. रोनॉल्ड मान ने अपने मौलिक विचार रखे।

नैतिक अधिष्ठान द्वारा व्यवसाय में मूल्यवृद्धि

जैन इरिगेशन के संस्थापक डॉ. भवरलाल जैन ने सम्मेलन में आये हुए प्रतिभागियों को मंत्र देते हुए कहा कि कैसा भी व्यवसाय हो, समाज के बड़े वर्ग को वह प्रभावित करता है। व्यवसाय का सम्बन्ध केवल ग्राहक की आवश्यकता की पूर्ति तक ही सीमित है, ऐसा नहीं है। इसलिये जिस किसी स्थान पर जैसा भी व्यवसाय प्रारम्भ किया जाय, उसे एक मूल्यात्मक अधिष्ठान के रूप में प्रतिष्ठित करना आवश्यक है, इसके सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

♦♦♦

सलाहकार समिति की बैठक सम्पन्न

सलाहकार समिति के सदस्य बैठक करते हुए

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के सलाहकार समिति की प्रथम बैठक गाँधी तीर्थ पर दिनांक ३-४ अक्टूबर २०१३ को सम्पन्न हुई। इस बैठक में फाउण्डेशन के संचालक मंडल के सभी सन्मानित सदस्य सर्वश्री न्यायमूर्ति श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी, डॉ. भवरलाल जैन, डॉ. डी. आर. मेहता, श्री दलुभाऊ जैन, श्री अशोक जैन तथा सलाहकार समिति के सम्मानित सदस्य सर्वश्री डॉ. रघुनाथ माशेलकर, डॉ. अनिल काकोडकर, डॉ. सुदर्शन आय्यंगर तथा फाउण्डेशन के अकादमिक प्रमुख डॉ. एम. पी. मथाई उपस्थित थे।

इस बैठक में निम्न बिन्दुओं पर विचार विमर्श हुआ-

चेयरमैन श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी ने कहा कि गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की सभी गतिविधियों को महात्मा गाँधी के मूल सिद्धांतों के अनुरूप नियोजित ढंग से सावधानी पूर्वक संचालित किया जाना चाहिये।

डॉ. भवरलाल जैन ने संस्था के वित्तीय पक्ष को रखते हुए कहा कि अभी तक हम संस्था की स्थाई निधि का निर्माण नहीं कर सके हैं, यह कार्य हम शीघ्र ही पूरा कर लेंगे। श्री अशोक जैन ने इस सन्दर्भ में बताया कि गाँधी तीर्थ का संरक्षण और विकास अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित एवं विकसित करने जैसा है, अत: इसके लिये धन की कोई कमी नहीं होने दी जायेगी।

डॉ. रघुनाथ माशेलकर और डॉ. अनिल काकोडकर ने 'खोज गाँधी की' संग्रहालय को एक उत्कृष्ट संग्रहालय बताते हुए इसके व्यापक प्रचार-प्रसार पर बल दिया तथा संग्रहालय को भारत के पर्यटन मानचित्र पर डालने का सुझाव दिया।

डॉ. भवरलाल जैन ने संग्रहालय में एक ऐसा खण्ड जोड़ने की अपनी इच्छा जताई जिसमें गाँधीजी के बेहद करीबी व्यक्तियों का चित्र गाँधीजी के प्रति उनके विचारों/अभिप्रायों सहित लगाया जाय। साथ ही उन व्यक्तियों के विषय में गाँधीजी द्वारा किये गये मूल्यांकन को भी प्रदर्शित किया जाय।

संस्था के अकादमिक प्रमुख प्रो. एम. पी. मथाई ने अभिलेखागार में क्रमश: २७ सितम्बर २०१३ तक किये गये डिजिटाइजेशन डेटा और २९ सितम्बर २०१३ तक पुस्तकालय में शामिल की जानी वाली पुस्तकों का सार-संक्षेप प्रस्तुत किया।

डॉ. भवरलाल जैन ने गाँधी के ग्राम स्वराज के सपनों को साकार करने हेतु गांवों को स्वावलम्बी बनाने की योजना को प्राथमिकता के आधार पर लेने को कहा। आपने बताया कि इस सन्दर्भ में वाकोद गांव को आदर्श गांव के रूप में लेकर शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य किया गया है किन्तु ग्रामीणों के चारित्रिक विकास का कार्य अभी शेष है।

भगिनी निवेदिता ग्रामीण विज्ञान निकेतन की संस्थापक श्रीमती नीलिमा मिश्रा ने महिला स्वयं रोजगार विकास कार्यक्रम के क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों को समिति के सामने रखा।

डॉ. अनिल काकोडकर ने सर्वोदय ग्राम के विषय में अपने विचार रखते हुए फाउण्डेशन को शिक्षा और शोध-समन्वित समग्रज्ञान के वातावरण को तैयार करने को कहा।

डॉ. डी. आर. मेहता ने गांवों के स्वावलम्बन हेतु एक प्रारूप (माडल) बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. रघुनाथ माशेलकर ने गांवों के स्वावलम्बन हेतु युवा और उत्साही नवयुवकों का एक नेटवर्क स्थापित करने का आग्रह किया। डॉ. अनिल काकोडकर ने उक्त नेटवर्क के लिये आस पास के विद्यालयों से छात्रों की एक ऐसी टीम बनाने की बात की जो गांवों में जाकर ग्रामीणों की आवश्यकताओं को समझे और उनको पूरा करने हेतु आवश्यक संसाधनों का सर्वेक्षण कर सके।

डॉ. सुदर्शन आय्यंगर ने ग्रामीण संरचना हेतु समाजसेवियों की आवश्यकता पर बल दिया क्योंकि उनका सीधा सरोकार गांव और गांववालों से होता है।

डॉ. भवरलाल जैन ने सलाहकार समिति के सदस्यों के समक्ष संग्रहालय में एक 'दृश्य और श्रौव्य' (Light & Sound) कार्यक्रम आरम्भ करने का प्रस्ताव रखा जिसका सभी सदस्यों ने समर्थन किया। उन्होंने सभी सदस्यों के प्रति अपना आभार व्यक्त किया।

♦♦♦

सुविचार

व्यक्तिगत कार्य की अपेक्षा संस्थागत कार्य अधिक इसलिए पसन्द किया जाता है कि वह एक के बाद दूसरे और दूसरे के बाद तीसरे पुरुषों के हाथ में गया तो निरन्तर प्रगति करता जाता है।

(गाँधीजी की सूक्तियाँ, पृष्ठ ११२ से साभार)

– महात्मा गाँधी

'अक्षरधारा' ग्रंथ प्रदर्शनी

'अक्षरधारा' ग्रंथ प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डॉ. भवरलालजी जैन

जैन हिल्स, जलगाँव पर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन तथा जैन इरिगेशन सिस्टम्स द्वारा आयोजित 'अक्षरधारा' ग्रंथ प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह के अवसर पर बोलते हुए जैन इरिगेशन के संस्थापक एवं अध्यक्ष डॉ. भवरलाल जैन ने कहा कि जीवन में जिस प्रकार किसी विशेष व्यक्ति के आगमन से बदलाव आता है उसी प्रकार विन्स्टन चर्चिल की पुस्तक के एक वाक्य 'नेव्हर नेव्हर क्विट' ने मेरा जीवन बदल दिया।

सेवादास श्री दलूभाऊ जैन ने कहा कि किताबों ने हमारी संस्कृति को समृद्ध किया है। इसलिए सभी को पुस्तकों से मित्रता करनी चाहिए। हम स्वयं तो पुस्तकें पढ़ें ही, साथ ही दूसरों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। इसके पहले यह प्रदर्शनी जैन प्लास्टिक पार्क में दस दिनों के लिए आयोजित की गई थी जिसे कम्पनी के सहयोगियों द्वारा सराहा गया। इन दस दिनों (१९ से २८ दिसम्बर २०१३) में जैन इरिगेशन के सहयोगियों द्वारा लगभग ५ लाख रुपयों की पुस्तकें खरीदी गईं।

इस अवसर पर डॉ. भवरलाल जैन, सेवादास दलूभाऊ जैन, वरिष्ठ अधिकारी एस. वी. पाटिल तथा जे. जे. कुलकर्णी आदि उपस्थित थे।

•••

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा – २०१३

आज के युवाओं को उनके सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराने तथा उनके द्वारा अर्हित शिक्षा को व्यवहार में आचरित करने हेतु उन्हें

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा – २०१३ की परीक्षा देते हुए छात्र-छात्रायें

प्रेरित करने के उद्देश्य से गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन प्रतिवर्ष गाँधी विचार संस्कार परीक्षाओं का आयोजन करता है। सन् २००७ से प्रारम्भ इस अभियान में अबतक ३७४८ विद्यालयों और महाविद्यालयों से कुल ३,४९,५१८ विद्यार्थी शामिल हो चुके हैं।

छात्रों को सही मार्गदर्शन देने तथा सामाजिक और नैतिक मूल्यों के प्रति उन्हें सचेत करने हेतु गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन कटिबद्ध है। गाँधी विचार संस्कार परीक्षा को मूर्त रूप देने के लिए जुलाई से सितम्बर २०१३ के बीच सभी विद्यालयों और महाविद्यालयों के प्रमुखों से भेंट की गई। परीक्षा के महत्त्व को देखते हुए इस वर्ष महाराष्ट्र की रयत शिक्षण संस्था, सातारा, श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर, मराठवाडा शिक्षण प्रसारक मंडल, औरंगाबाद तथा श्री सरस्वती भुवन शिक्षण प्रसारक संस्था, औरंगाबाद इन चार संस्थाओं ने निजी तौर पर ध्यान देकर अपने विद्यालयों और महाविद्यालयों के लिए परिपत्रक भेजकर छात्रों को परीक्षा में सहभागिता हेतु प्रेरित किया। इस वर्ष १,०३८ परीक्षा केन्द्रों से कुल १,१५,२८४ छात्र गाँधी विचार संस्कार परीक्षा में सम्मिलित हुए।

परीक्षा प्रमाण पत्र वितरण

बी. आर. बोबडे गाँधी विचार संस्कार की परीक्षा के प्रमाणपत्र एवं पदक वितरण करते हुए

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा के प्रमाणपत्र का वितरण समारोह प्रदेश के जिन प्रमुख केन्द्रों पर आयोजित किया गया उनमें पहला समारोह पुणे परिक्षेत्र के लिए ११ जनवरी को डॉ. बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर महाविद्यालय, औंधगाव, पुणे में किया गया। पुणे जिले के १५,७५५ विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र दिया गया तथा प्रत्येक कक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करनेवाले छात्रों को पदक दिये गये इसके अतिरिक्त सभी परीक्षा केन्द्रों को चरखे के प्रतीक वाला एक आकर्षक सम्मान चिह्न भी प्रदान किया गया। इसी प्रकार कोल्हापूर तथा कोंकण परिक्षेत्र के लिए १३ जनवरी को श्री छत्रपति शाहू महाविद्यालय, कोल्हापूर में प्रमाणपत्र वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में कोल्हापूर जिले के ६,०९५ छात्रों के प्रमाणपत्र और पदक वितरित किये गये। मराठवाडा परिक्षेत्र का समारोह १० जनवरी को लातूर में परिमल माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में लातूर जिले के ३४०४ विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र और पदक वितरित किये गये। इन सभी समारोहों में संबन्धित विद्यालयों के पदाधिकारियों के साथ-साथ गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के सर्वश्री बासु, निलेश पाटील, यतिन सोनार तथा भुजंगराव बोबडे उपस्थित रहे।

कक्षानुसार विद्यार्थी संख्या

संस्था	विद्यालय	महाविद्यालय	डी.एड	बी.एड	कुल
	८२९	१७४	१९	१६	१,०३८
विद्यार्थी	९४,४९३	१८,९६२	८८०	९४९	१,१५,२८४

वर्ष	केंद्र संख्या	छात्रों की संख्या
२००७	७३	३,८७६
२००८	१४१	९,२४०
२००९	१३५	९,०७०
२०१०	३५९	३१,३५४
२०११	९६१	७९,७४१
२०१२	१,०४१	१,००,९५३
२०१३	१,०३८	१,१५,२८४
कुल संख्या	३,७४८	३,४९,५१८

♦♦♦

गाँधी साहित्य और खादी प्रचार-प्रसार कार्य

मोहन से महात्मा चित्रप्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए छात्र-छात्रायें

महात्मा गाँधी के विचारों के प्रचार-प्रसार हेतु 'मोहन से महात्मा' नामक एक चित्रप्रदर्शनी का आयोजन श्री शिवाजी उर्दू विद्यालय तथा कनिष्ठ महाविद्यालय, मेहकर में दि. २२ नवम्बर से २४ नवम्बर २०१३ तक किया गया। मेहकर शहर में मुसलमान बंधुओं की संख्या अधिक है। स्थानीय समाजसेवक स्व. श्री बढे ने शिवाजी उर्दू हाईस्कूल तथा जूनियर कॉलेज की स्थापना की थी। इस प्रदर्शनी को देखने के लिए जि. बुलढाणा के अनेक विद्यालयों से करीब १२,००० विद्यार्थी, तथा स्थानीय नागरिक और अध्यापकगण उपस्थित रहे। गाँधी विचार के प्रचार-प्रसार कार्य में मेहकर के सभी स्थानीय नागरिक तथा विद्यालय के प्राचार्य श्री टाकसालकर ने अपना सक्रिय योगदान दिया। फाउण्डेशन की ओर से श्री संतोष भिंताडे तथा श्री भुजंगराव बोबडे ने संपूर्ण कार्यक्रम को संपादित किया। प्रदर्शनी में ५१३० रुपये के खादी वस्त्रों तथा २४७४ रुपये के गाँधी साहित्य की बिक्री हुई।

♦♦♦

ग्राम विकास हेतु खादी उत्पादन आवश्यक

लोकवस्त्र खादी के लिए काते हुए सूतों को सहेजता हुआ कारीगर

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन महात्मा गाँधी के ग्राम स्वराज की संकल्पना के अनुरूप खादी उत्पादन का प्रबल पक्षधर है। फाउण्डेशन के खादी उत्पादन विभाग में दस सौर अंबर चरखे द्वारा सूत कताई की जाती है। दो पेडल लूम तथा दो हैंडलूम से खादी वस्त्र की बुनाई का कार्य पिछले जून माह से प्रारम्भ किया गया। फाउण्डेशन के इस खादी विभाग से अबतक ८३१ मीटर लोकवस्त्र खादी का उत्पादन किया जा चुका है।

फाउण्डेशन की यह खादी उत्पादन इकाई एक डेमो यूनिट है जो खादी वस्त्रों के प्रोत्साहन हेतु स्थापित की गई है। संग्रहालय देखने आनेवाले दर्शक खादी उत्पादन कार्य से प्रभावित होकर खादी पहनने का संकल्प लेकर जाते हैं। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन आसपास के गाँवों में चरखे के माध्यम से लोगों को स्वावलम्बन और स्वरोजगार के लिए प्रेरित करता है। फाउण्डेशन की यह एक स्थाई प्रवृत्ति है।

♦♦♦

स्वच्छ पेयजल हेतु पाइपलाइन की आपूर्ति

शिरसोली प्र. न. पाइप लाइन

नवम्बर २०१३ में, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन एवं ग्रामपंचायत शिरसोली के संयुक्त उपक्रम के रूप में शिरसोली प्र.न. के वॉर्ड क्र. १,२ और ३ में गांव वालों को स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु १५०० फीट पाइपलाइन डाली गई। इस कार्य के लिए ग्रामीणों ने कुल लागत का ४० प्रतिशत तथा गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने ६० प्रतिशत का बहुमूल्य सहयोग दिया।

♦♦♦

साभार-प्राप्ति

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन पुस्तकालय एक समृद्ध पुस्तकालय है जिसमें महात्मा गाँधी द्वारा लिखी और महात्मा गाँधी पर लिखे प्राचीन और नवीन साहित्य का अनुपम संग्रह है। माह जुलाई से दिसम्बर २०१३ के अन्तराल में पुस्तकालय में निम्न पुस्तकों का समावेश किया गया -

महात्मा गाँधी द्वारा लिखीं पुस्तकें (गुजराती)	१	कुल ३८
महात्मा गाँधी पर लिखीं पुस्तकें (गुजराती)	३७	
महात्मा गाँधी द्वारा लिखीं पुस्तकें (अंग्रेजी)	१३	कुल १६९
महात्मा गाँधी पर लिखीं पुस्तकें (अंग्रेजी)	१५६	
महात्मा गाँधी द्वारा लिखीं पुस्तकें (मराठी)	२	कुल २६
महात्मा गाँधी पर लिखीं पुस्तकें (मराठी)	२४	
विनोबा भावे द्वारा लिखीं पुस्तकें (गुजराती)	३	कुल ४
विनोबा भावे पर लिखीं पुस्तकें (गुजराती)	१	
विनोबा भावे पर लिखीं पुस्तकें (अंग्रेजी)	१	कुल २
विनोबा भावे द्वारा लिखीं पुस्तकें (हिन्दी)	१	
विनोबा भावे पर लिखीं पुस्तकें (हिन्दी)	१	
विनोबा भावे पर लिखीं पुस्तकें (मराठी)	१	कुल २३९

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन पुस्तकालय को विभिन्न संस्थाओं / व्यक्तियों द्वारा भेंट में पुस्तकें आने का क्रम जारी है। माह जुलाई से दिसम्बर २०१३ के अन्तराल में पुस्तकालय में जिन संस्थाओं / व्यक्तियों ने हमें पुस्तकें भेंट की हैं, वे हैं -

१	वालजी देसाई कलेक्शन्स, नई दिल्ली	१२ पुस्तकें
२	डॉ.अंजली एवं नन्दन माहेश्वरी, जलगांव	८ पुस्तकें
३	मणिभवन, मुम्बई	७७ पुस्तकें
४	नारायण धुमाल, श्रीरामपुर	१ पुस्तक
५	गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद	११ पुस्तकें
६	डॉ. मायकल नॅग्लर, कैलीफोर्नियां	२ पुस्तकें
७	कनक तिवारी, रायपुर	२७ पुस्तकें

इन सभी महानुभावों द्वारा उक्त पुस्तकें भेंट हेतु बहुत-बहुत आभार।

♦♦♦

प्रवेश सूचना - एम. ए. गाँधी विचार एवं सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम

गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद द्वारा संचालित उपरोक्त पत्राचार पाठ्यक्रम (मराठी एवं हिन्दी माध्यम) शुरू है। वर्ष २०१४-१५ के लिए उक्त पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु विद्यार्थी किसी भी विद्याशाखा के स्नातक कक्षा में कम से कम ४० प्रतिशत अंक के साथ उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के लिए ५ प्रतिशत की छूट है। अन्य जानकारी एवं प्रवेश हेतु सम्पर्क करें -

डीन,

गाँधी इंटरनेशनल स्टडी एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट

गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, जलगाँव - ४२५००१, महाराष्ट्र.

फोन - ०२५७-२२६०३८१, ०९४०४९५५२७२

गाँधी तीर्थ/संग्रहालय के दर्शकों के अभिप्राय

After visiting Gandhi Teerth... my view about life has become completely changed. It made me really thinking as to what I can do towards my country and to nature and world as a whole.

Mrs. Leena R Nair
D. 2/301, Rutu Estate, Thane (Maharashtra).
28/07/2013

....

An unique exhibit of Mahatma Gandhiji's journey from ordinary human being to Mahatma. It offers a very rare opportunity to study the life journey of Gandhiji. Another very admirable feature is a very apt use of modern technology. It is a world class museum not less than any other in western world.

Heartiest congratulation to the team and respected Shri Bhavarlalji Jain.

Suhasini Desai,
Maharashtra Institute of Technology, Pune.
26/09/2013

....

This is a most amazing museum experience I have ever had. Thank you for acting as a bridge between the legacy of Gandhi and the world.

Stephanie N. Van Hook
Metta Centre for Non-violence, Petaluma C A, USA.
30/09/2013

....

I was deeply impressed and thrilled by the experience. I am asked to give comments:

1. I would place more emphasis on constructive programme.....
2. I would not say that a Satyagrahi," inflicts sufferings on her or himself as he endures sufferings.
3. The depiction of enthusiasm of the people 1920-1940 is slightly idealized. Gandhiji felt that they were primarily inspired by the power of us to bring them freedom. Some but not many were fired with love and self-sacrifice of course.

This is a tremendous contribution you have made to world peace and human well being. May he smile on our humble work.

Michael Nagler
Metta Centre for Non-violence, Petaluma C A, USA.
30/09/2013

एस. सी. जैनी, सीबीडीटी मेम्बर्स
दि. ०७.०७.२०१३

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीकि के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिये देवतुल्य हैं।

मोहन जोशी, सिने कलाकर, मुम्बई
दि. १९.०७.२०१३

किरीटभाई सोमैय्या
दि. २६.०७.२०१३

प्रो. एलेन डगलस, यू.एस.ए.
दि. १२.०८.२०१३

नचिकेता देसाई तथा डॉ. सुदर्शन आय्यंगर, कुलपति, गुजरात विद्यापीठ, दि. १२.०८.२०१३

राधाबेन भट्ट, वर्धा
दि. १६.०८.२०१३

पंकज जैन और वंदना जैन, नई दिल्ली
दि. २७.०८.२०१३

डॉ. सुगन बरंठ, डॉ. श्रीराम जाधव, मालेगाँव
दि. १२.०९.२०१३

मेल डंकन, यू.एस.ए.
दि. ०२.१०.२०१३

डॉ. अनिल काकोडकर, बीएआरसी, मुम्बई
दि. ०३.१०.२०१३

ओशिनोबू निसाका, जापान
दि. ०७.१०.२०१३

ना. अजितदादा पवार, उपमुख्यमंत्री, महाराष्ट्र राज्य
दि. १६.१०.२०१३

कसिम शेत्तिमा, नाइजीरिया
दि. २३.११.२०१३

प्रज्ञा बढे, एम.टी.डी.सी. मुम्बई
दि. ०४.१२.२०१३

आनंदीबेन पटेल, गुजरात
दि. ०६.१२.२०१३

गाँधियन फारेन डेलिगेशन, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
दि. १०.१२.२०१३

गिलबरटो कझानी, इटली
दि. १४.१२.२०१३

नेटाल इण्डियन कॉँग्रेस

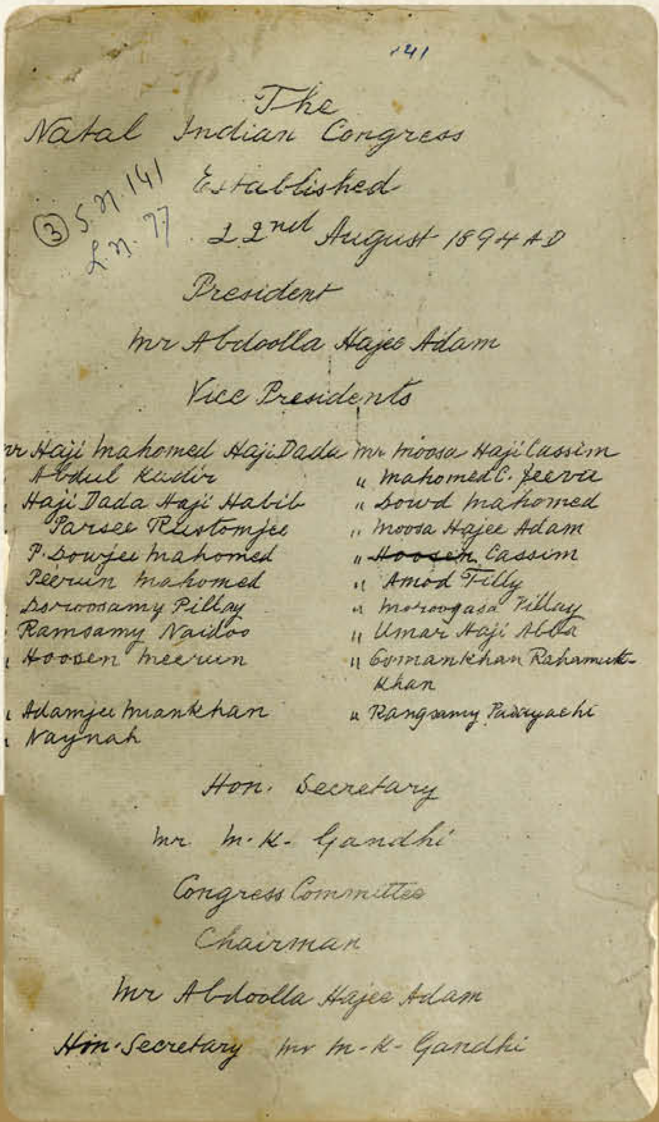
The Natal Indian Congress
Established
22nd August 1894 A.D.
President
Mr Abdoolla Hajee Adam
Vice Presidents
Mr Haji Mahomed Haji Dada, Mr Moosa Haji Cassim
Abdul Kadir, Mahomed C. Jeeva
Haji Dada Haji Habib, Dowd Mahomed
Parsee Rustomjee, Moosa Hajee Adam
P. Dowjee Mahomed, Hoosen Cassim
Peeran Mahomed, Amod Tilly
Doraisamy Pillay, Murugasa Pillay
Ramsamy Naidoo, Umar Haji Abba
Hoosen Meeran, Osmankhan Rahamutkhan
Adamjee Miankhan, Rangsamy Padayachi
Naynah
Hon. Secretary
Mr M. K. Gandhi
Congress Committee
Chairman
Mr Abdoolla Hajee Adam
Hon. Secretary Mr M. K. Gandhi

The Netal Indian Congress

Established
22nd August, 1894

President
Mr. Abdoola Hajee Adam

Vice - Presidents

Mr. Messrs Hajee Mahomed Hajee Dada	Mr. Moosa Hajee Cassim
Mr. Abdool Kadir	Mr. Mahomed C. Jeeva
Mr. Hajee Dada Hajee Habib	Mr. Dawad Mahomed
Mr. Parsee Rustomjee	Mr. Moosa Hajee Adam
Mr. P. Dawjee Mahomed	Mr. Hoosen Cassim
Mr. Peeran Mahomed	Mr. Amod Tilli
Mr. Doraiswamy Pillay	Mr. Murugesa Pillay
Mr. Ramaswami Naidoo	Mr. Omar Hajee Aba
Mr. Hoosen Miran	Mr. Osmankhan Rahamatkhan
Mr. Adamjee Miankhan	Mr. Rangaswami Padayachi
Mr. Nayanah	

Hon. Secretary
Mr. M. K. Gandhi

Congress Committee
Chairman
Mr. Abdoola Hajee Adam

Hon. Secretary, Sd/- Mr. M. K. Gandhi

सन् १८९४ के अगस्त महीने की २२ तारीख को नेटाल इण्डियन कॉँग्रेस का जन्म हुआ।

मो. क. गाँधी नेटाल इण्डियन कॉँग्रेस के संस्थापकों के साथ, १८९५

मैने आरम्भ में ही यह सीख लिया था कि सार्वजनिक काम कभी कर्ज लेकर नहीं करना चाहिये। दूसरे कामों के बारे में लोगों का विश्वास चाहे किया जाय, पर पैसे के वादे का विश्वास नहीं किया जा सकता। मैंने देख लिया था कि लिखायी हुई रकम चुकाने का धर्म लोग कहीं भी नियमित रूप से नहीं पालते। इसमें नेटाल के भारतीय अपवादरूप नहीं थे। अतएव नेटाल इण्डियन कॉँग्रेस ने कभी कर्ज लेकर काम किया नहीं।

किसी भी संस्था का बारीकी से रखा गया हिसाब उसकी नाक है। इसके अभाव में वह संस्था आखिर गन्दी और प्रतिष्ठा–रहित हो जाती है। शुद्ध हिसाब के बिना शुद्ध सत्य की रक्षा असम्भव है।

क्रमशः